अनुदेशक प्रशिक्षण संदर्शिका

परिचय

- पंजीकरण एवं प्रतिभागियों का परिचय/डी.पी.ई.पी. (संक्षिप्त परिचय)
- प्रशिक्षण की आवश्यकता एवं उद्‌देश्य
- शिक्षा क्या और क्यों ?
- वैकल्पिक शिक्षा

  क. परिचय

  ख. किनके लिए (लक्ष्य समूह)
- लक्ष्य समूह की विशेषताएं

वैकल्पिक शिक्षा का स्वरूप

- वैकल्पिक शिक्षा के विभिन्न माडल
- शिक्षा घर, बाल शाला, प्रहर पाठशाला, मकतब मदरसा, ऋषीवैली माडल, ब्रिज कोर्स
- शिक्षा गारण्टी योजना, वैकल्पिक नवाचारी शिक्षा
- विद्या केन्द्र

अनुदेशक के दायित्व

- अनुदेशक की पृष्ठभूमि
- कार्य एवं दायित्व
- आदर्श अनुदेशक के गुण
- केन्द्र स्थल चयन

समुदाय की सहभागिता

- वैकल्पिक शिक्षा में/केन्द्र संचालन में समुदाय की सहभागिता

- पृष्ठ भूमि – बच्चों को केन्द्र भेजने में विशेषकर सुविधा विहीन, बालिकाएं, अल्पसंख्यक, बाल श्रमिक
- समुदाय का तात्पर्य – अभिभावक, ग्राम शिक्षा समिति/ग्राम सभा, क्षेत्र में कार्यरत अन्य संस्थान

केन्द्र प्रबन्धन

बच्चों का प्रवेश

वातावरण निर्माण – केन्द्र की साज सज्जा

शैक्षिक सामग्री प्रबन्धन

क. बच्चों के लिए – पाठ्य पुस्तकें, कापी पेन्सिल

ख. अनुदेशक के लिये –संदर्शिका

ग. शिक्षण अधिगम सामग्री

घ. केन्द्र की अन्य सामग्री – श्यामपट्, चाक, डस्टर आदि

प्रशासनिक सहयोग तंत्र

- न्याय पंचायत संसाधन केन्द्र समन्वयक
- विकास खण्ड संसाधन केन्द्र समन्वयक, सह समन्वयक
- जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान प्रतिनिधि/संकाय सदस्य
- ज़िला समन्वयक

अभिलेखों का रखरखाव

- प्रवेश पंजिका
- उपस्थिति पंजिका
- डायरी
- स्टाक रजिस्टर
- निरीक्षण पंजिका

- प्रगति पंजिका
- बैठक पंजिका

हमारी शैक्षिक सामग्री

बच्चों की पाठ्य पुस्तकें

सीखने सिखाने की प्रक्रिया

- सीखना क्या है
- बच्चे कैसे सीखते हैं ?
- बाल केन्द्रित शिक्षा
- रोचक शिक्षण
- खेल द्वारा, गतिविधि, अभिनय, अनुकरण, संचार माध्यम, भ्रमण गीत, कविता, कहानी आदि के द्वारा।

शिक्षण के प्रकार

- विषय आधारित
- थीम आधारित

भाषा

भाषा का अर्थ

भाषा शिक्षण की आवश्यकता एवं उद्देश्य

स्थानीय भाषा से मानक भाषा तक

भाषा सीखने की प्रक्रिया

भाषा सीखने में मददगार बिन्दु

- विभिन्न ध्वनि, चित्र, बच्चों के अनुभव, खेल

भाषा शिक्षण के रूप

- सुनना, सुनकर समझना

- बोलना बोलकर अभिव्यक्त कर पाना
- पढ़ना व पढ़कर अभिव्यक्त कर पाना
- लिखना व लिखकर अभिव्यक्त कर पाना

भाषा के प्रकार

- मौखिक भाषा, लिखित भाषा

  भाषा के कौशल सीखने की विभिन्न गतिविधियां
- सुनना और सुनकर समझना
  - छोटे–छोटे गीत और कहानी सुनना, सुनाना
- बोलना, बोलकर अभिव्यक्त करना
  - चित्रकथा/माडल, भ्रमण घटना, दृश्यचित्र पर बातचीत, ध्वन्यात्मक गीत
- पढ़ना
  - फ्लैश कार्ड, अक्षरों का खेल
- लिखना, लिखकर अभिवयक्त करना
  - लेखनपूर्व अभ्यास
  - विभिन्न आकृतियों पर हाथ/कलम चलाना
  - सीधी, खड़ी/पड़ी/बेड़ी लकीरों का अभ्यास
  - वर्णो का अभ्यास, अमात्रिक शब्द, मात्रिक शब्द
  - चित्र देखकर शब्द लिखने का अभ्यास

गणित

- गणित शिक्षण की आवश्यकता एवं उद्देश्य
- वैचारिक पृष्ठभूमि
- संख्या, संख्यांक तथा शून्य की अवधारणा

गतिविधियां

- समूहीकरण, वर्गीकरण, क्रम

- जोड़ घटाना
- लम्बाई, ऊंचाई, चौडाई, मोटाई की समझ
- विभिन्न आकृतियों की समझ
    - वृत्ताकार, गोलाकर, आयताकार, तिकोन, चौकोन
- मापन की समझ
    - भार, समय, लम्बाई, धारिता, मुद्रा
- पैटर्न की समझ
- व्यावहारिक ज्ञान
    - चीजों को व्यवस्थित रखना, रूपये पैसे की समझ
- गुणा
- भाग

हमारा परिवेश/ पर्यावरण

- परिवेश की समझ
    - घर परिवार/पास पड़ोस/ हमारे मद्‌दगार व्यवसाय
    - पशु पक्षी
    - सार्वजनिक स्थल, स्कूल आदि
    - राष्ट्रीय पर्व, प्रतीक, चेतना
    - त्योहार, मेला
- पर्यावरण की समझ, विशेषताएं
- परिवेश एवं पर्यावरण में अन्तर
- प्राकृतिक पर्यावरण
    - नदी, पहाड़, वायु, मिट्‌टी
    - स्वच्छता/ प्रदूषण रोकने के उपाय
- पर्यावरण शिक्षण की विधि

- खेल, अभिनय, भ्रमण, गतिविधि आदि के द्वारा

बहुस्तरीय एवं बहुकक्षा शिक्षण

- बहुस्तरीय कक्षा शिक्षण की समझ
- आवश्यकता एवं उद्देश्य
- बहुकक्षा शिक्षण विधा

मूल्यांकन

- मूल्यांकन क्या और क्यों ?
- आवश्यकता एवं महत्व
- मूल्यांकन के प्रकार

मूल्यांकन का दृष्टिकोण

- सकारात्मक, सुधारात्मक

फीड बैक

- फीड बैक क्या और क्यों ?
- आवश्यकता एवं महत्व
- प्रशिक्षण का फीड बैक
- अनुदेशक के सुझाव
- कार्य योजना का निर्माण

परिशिष्ट

- आवश्यक प्रपत्र
- गतिविधि बैंक
- गीत कहानी संग्रह
- खेल
- शब्दार्थ सूची
- सम्बन्धित शासनादेश

प्रथम दिन

किसी भी प्रशिक्षण कार्यक्रम में पंजीकरण प्रतिभागियों का स्वागत एवं परिचय की औपचारिकताओं से प्रशिक्षण की शुरूआत होती है, किन्तु यदि कार्यक्रम में जीवन्तता लानी है। सीखने सिखाने का बेहतर माहौल तैयार करना है। तो जरूरी है कि इन औपचारिकताओं के साथ कुछ ऐसा भी किया जाय कि प्रतिभागियों और प्रशिक्षकों के बीच दूरी कम हो। प्रतिभागी बे झिझक अपनी बात कह सके। इसके लिए जरूरी है कि प्रशिक्षण में कुछ झिझक तोड़ने वाली रोचक गतिविधियां भी करायी जाय। परिशिष्ट मे ऐसी गतिविधियों का संकलन किया गया है।

उपरोक्त औपचारिकताओं के बाद झिझक तोड़ने के लिए निम्न गतिविधि की जा सकती है:–

गतिविधि – संख्या खेल विधि

- प्रतिभागियों की संख्या के बराबर कागज के टुकड़े लें। उन पर क्रमानुसार संख्यायें लिख दें। कागज के टुकड़ों को मोड़कर बीच में रख दें तथा प्रतिभागियों को एक–एक टुकड़े उठाकर वापस बड़े गोले में खड़े होने को कहें।
- खेल संचालक (प्रशिक्षक) कोई दो संख्या बोलें और इन दो संख्या वाले प्रतिभागी संचालक की नजर बचाते हुए आपस में इशारा करके अपना स्थान बदलेंगे।
- स्थान बदलने के क्रम में यदि संचालक दोनों में किसी एक के स्थान पर खड़ा हो जाता है तो स्थान खोने वाले को आगे का खेल संचालित करना होगा।
- यदि संचालक तीन बार में किसी प्रतिभागी के स्थान को नहीं ले पाया तो उसे समूह द्वारा निर्धारित कार्य जैसे चुटकुले सुनाना आदि करना होगा।
- खेल के बाद प्रतिभागी अपने–अपने स्थान पर बैठें तथा खेल पर संक्षिप्त चर्चा करें। झिझक तोड़ने की उपरोक्त गतिविधि के बाद सघन परिचय की कोई गतिविधि की जा सकती है।

प्रशिक्षण संचालन समय, प्रशिक्षण के सामान्य नियम प्रतिभागियों के साथ तय करें। सामान्यतः प्रशिक्षण 8 घंटे प्रातः 9 बजे से शाम 5 बजे तक चलना चाहिए। अनुशासन के सामान्य नियम भी प्रतिभागियों के साथ मिलकर तय करें। निम्न समितियाँ गठित की जाय।

1. प्रशिक्षण कक्ष व्यवस्था समिति।
2. भोजन समिति।
3. सांस्कृतिक कार्यक्रम समिति।
4. समय सचेतक।
5. प्रतिवेदन लेखक।

व्यवस्था समिति के गठन के पश्चात प्रतिभागियों को डी.पी.ई.पी. एवं प्रदेश के प्रमुख शैक्षिक परियोजनाओं से परिचित कराया जाय।

प्रदेश में प्राथमिक शिक्षा के विकास हेतु संचालित कुछ योजनाएं

कार्यक्रम / योजना	प्रारम्भ का वर्ष	प्रमुख उद्देश्य
अनौपचारिक शिक्षा	1979	विद्यालय जाने योग्य, पढ़ना छोड़ चुके बच्चों की प्राथमिक शिक्षा पूर्ण कराना।
छात्रवृत्ति योजनाएं	1981	पिछड़े एवं दलित वर्ग के बच्चों को नियमित छात्रवृत्ति देना।
आपरेशन ब्लैक बोर्ड	1987	प्राथमिक विद्यालयों में भौतिक सुविधायें बढ़ाना
बेसिक शिक्षा परियोजना –I	1993	शैक्षिक दृष्टि से पिछड़े जिलो में साक्षरता बढ़ाना।
बेसिक शिक्षा परियोजना –II	1997	असेवित क्षेत्रों में प्राथमिक विद्यालयों की स्थापना
जनशाला कार्यक्रम	1997	सभी वर्गो को प्राथमिक शिक्षा की सर्व सुलभता करना।
जिला प्राथमिक शिक्षा कार्यक्रम –II	1997	कम महिला साक्षरता वाले जनपदों में साक्षरता वृद्धि।
जिला प्राथमिक शिक्षा कार्यक्रम –III	1999	निम्न साक्षरता वाले जनपदों में विशेष अभियान चलाना।
शिक्षा गारन्टी योजना	1999	असेवित क्षेत्र के गांवो में प्राथमिक स्तर पर कक्षा 1 व 2 तक शिक्षा उपलब्ध कराना।
शिक्षा मित्र योजना	1999	प्राथमिक विद्यालयों में शिक्षकों की कमी पूरी करना।
सर्व शिक्षा अभियान	2001	वर्ष 2010 तक सम्पूर्ण साक्षरता की स्थिति तक पहुँचाना।

निःशुल्क पाठ्य पुस्तक वितरण	2001	परिषदीय विद्यालयों में कक्षा 1 से 5 तक सभी वर्गो की बालिकाओं और अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति बालको को निःशुल्क पाठ्य पुस्तकें प्रदान करना।

प्रशिक्षण की आवश्यकता एवं उद्देश्यः–

वैकल्पिक केन्द्रों के संचालन के लिए चयनित अनुदेशक प्रायः सामान्य योग्यता वाले व्यक्ति होते हैं उनकी केन्द्र संचालन एवं शिक्षण कार्य की दक्षता विकसित करने के अलावा

प्रशिक्षण के निम्न उद्देश्य हैं :–

- वैकल्पिक शिक्षा की अवधारणा से अवगत कराना।
- वैकल्पिक शिक्षा के विभिन्न माडल से परिचय कराना।
- पाठ्यक्रम, पाठ्य पुस्तक, शिक्षक सन्दर्शिका, सहायक शिक्षण सामग्री निर्माण एवं अन्य उपलब्ध सामग्री से अवगत कराना।
- शिक्षण की नवीन विधाओं से अवगत कराना।
- शिक्षा से अपवंचित बच्चों को प्रेरित कर शत – प्रतिशत नामांकन के लक्ष्य को प्राप्ति हेतु आवश्यक प्रयोग करने के लिए प्रेरित करना।
- बच्चों का ठहराव सुनिश्चित करने हेतु बाल केन्द्रित गतिविधि आधारित, रूचि पूर्ण शिक्षण विधा से अवगत कराना।
- ग्राम शिक्षा समिति, अभिभावक समिति एवं अन्य स्थानीय समितियों से सहयोग प्राप्त करने हेतु बैठक आयोजित करने के बारे में बताना।
- बच्चों को मुख्य धारा से जोड़ने हेतु प्रयास की विधा से अवगत कराना।
- दक्षता आधारित गुणवत्तापरक शिक्षा की अवधारणा एवं विधा से अवगत कराना।
- सतत् मूल्यांकन के महत्व एवं विधा से अवगत कराना।

- सीखने सिखाने की प्रक्रिया, बाल मनोविज्ञान से परिचय कराना।
- अनुदेशक शिक्षण कार्य करने की दक्षता विकसित करना।
- ग्राम शिक्षा आयोजित करने हेतु, समुदाय से सम्पर्क कर लक्ष्य समूह के केन्द्र जोड़ने हेतु प्रेरित करना, अनुदेशक को एक शिक्षक के रूप में तैयार करना।
- अनुदेशक के रूप में करने की दक्षता एवं व्यवहारिक निपुणता विकसित करना।

शिक्षा क्या और क्यों

शिक्षा क्या और क्यों के मुद्दे पर बेहतर समझ के लिए जरूरी है कि प्रतिभागियों से भी गहन चर्चा की जाय। उनका नजरिया पता किया जाय। प्रयास यह हो कि सभी प्रतिभागी कम से कम एक वाक्य जरूर बोले –

चर्चा के क्रम में प्रतिभागी सामान्यतः निम्न बाते कहेंगे –

- जीवन यापन के लिए शिक्षा।
- जीवन स्तर के लिए ऊँचा उठाने के लिए।
- ज्ञान पाने के लिए।
- समाज में सम्मान हेतु।
- नौकरी के लिए।
- मानसिक विकास के लिए।
- सर्वार्गीण विकास के लिए।

इन बिन्दुओं के बाद प्राथमिक शिक्षा के बाद प्राथमिक शिक्षाओं की बाधाओं पर प्रतिभागियों से पूछे कि शिक्षा को सर्वाणीण विकास का साधन माना जाता है तो अब तक सब लोग क्यों नहीं शिक्षित हो गये इसमें क्या बाधायें हैं।

इस मुद्दे पर चर्चा से निम्न बिन्दु आ सकते है –

- गरीबी
- स्कूल दूर होना।
- अरूचि पूर्ण शिक्षा।

- जागरूकता का अभाव।

प्राथमिक शिक्षा की बाधाओं के सन्दर्भ में एक बात और महत्वपूर्ण है कि समाज के विभिन्न वर्ग शिक्षा के प्रति क्या सोच रखते हैं। इसके लिए प्रतिभागियों के चार समूह बना दें। उन्हें छोटे समूहों में चर्चा के लिए निम्न बिन्दु दें।

पहला समूह – बहुत गरीब–वंचित वर्ग की शिक्षा के प्रति सोच।

दूसरा समूह – मजदूर किसान परिवार की शिक्षा के प्रति सोच।

तीसरा समूह – मध्यम वर्गीय नौकरी पेशा परिवार की शिक्षा के प्रति नजरियां।

चौथा समूह – व्यापारी परिवार शिक्षा के प्रति धारणा।

चारों समूह जब अपनी चर्चाओं का सार प्रस्तुत करेंगे तो बात स्पष्ट दिखेगी कि शिक्षा की आदर्श धारणा और विभिन्न वर्गो की सोच में बहुत अन्तर हैं जो प्राथमिक शिक्षा की प्रमुख बाधा है। अनुदेशकों को इन विभिन्न वर्ग के लोगों में जाकर उन्हें शिक्षा के महत्व को बताना है। सभी वर्ग के शिक्षा वंचित बच्चों को अपने केन्द्र में लाना है।

वैकल्पिक शिक्षा

- वैकल्पिक शिक्षा, प्राथमिक शिक्षा को सर्व सुलभ करने का एक प्रयास है। यह औपचारिक शिक्षा के समान ही एक कार्यक्रम है। यह कार्यक्रम उन बच्चों के लिए शिक्षा प्राप्त करने का विकल्प है, जो पारिवारिक परिस्थितियों, अर्थोपार्जन या अन्य सामाजिक कारणों से विद्यालय जाने की उम्र होने पर भी पढ़ने नहीं जा सके।
- यह उन शाला त्यागी बच्चों के लिए भी एक अवसर है जो पढ़ने तो गये किंतु प्राथमिक स्तर की शिक्षा पूरी किये बिना बीच में ही विद्यालय छोड़ गये।
- यह उन बच्चों के लिए भी है, जो कामकाजी अथवा बालश्रमिक हैं।
- ग्रामीण क्षेत्र/अल्पसंख्यक वर्ग की बालिकायें जो अधिक उम्र हो जाने के कारण मनोवैज्ञानिक दबाव से या घरेलू ज़िम्मेवारी के कारण विद्यालय नहीं जा पाती हैं।
- घूमंतू जाति/बंजारा जाति, नगर क्षेत्र की मलिन बस्तियों में रहने वाले बच्चों के लिए शिक्षा का विकल्प वैकल्पिक शिक्षा है।
- भौगोलिक कारण अथवा बच्चों की पहुँच से विद्यालय दूर होने अथवा विद्यालय की कठोर समय बद्धता का भी विकल्प है।

दूसरा दिन

वैकल्पिक शिक्षा के विभिन्न मॉडल

वैकल्पिक शिक्षा के मॉडल निम्नांकित हैं–

1. शिक्षा घर
2. बालशाला
3. प्रहर पाठशाला

4. मकतब–मदरसा

5. ऋषिवैली माडल

6. ब्रिज कोर्स

7. विद्या केन्द्र

बिखरी आबादी वाली असेवित बस्तियों में 6-11 वय वर्ग के बच्चों को शिक्षा देने के लिए उपयुक्त माडल है। इसकी विशेषतायें निम्नांकित हैं–

1. दबावमुक्त शिक्षा
2. रूचिपूर्ण शिक्षा
3. अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता
4. बहुवर्गीय शिक्षण
5. बहुस्तरीय शिक्षण

सीढ़ी पर चरणबद्ध तरीके से चढ़ने की भांति प्रत्येक बच्चा मुक्तरूप से एक–एक दक्षता को सीखता है। (इसमें तीव्रगति से सीखने वाले बच्चे एवं मंदगति से सीखने वाले बच्चे एक साथ अन्य बच्चों के साथ आगे बढ़ना होता है)। पूरी पढ़ाई बच्चे स्वनिर्मित अधिगम सामग्री द्वारा करते हैं। कक्ष में बच्चे अपने स्तर के अनुरूप छोटे समूह में शामिल होकर सीखते है। इसमें सभी बच्चों को अपनी गति से सीखने का अवसर मिलता है।

ब्रिज कोर्स

9-14 वय वर्ग के विद्यालय न जाने वाले घुमंतु/बंजारा जाति के बच्चों, ईट–भट्टे तथा लघु उद्योगो में काम करने वाले बच्चों को शिक्षा के लिए प्रेरित करता है। ब्रिज कोर्स की अवधि 2 माह से 12 माह तक हो सकती है। इस अवधि में भिन्न–भिन्न आयु–वर्ग एवं भिन्न–भिन्न बौद्धिक स्तर के बच्चों को अल्प अवधि में दक्षता विकास के पश्चात मुख्यधारा से जोड़ना है।

विद्या केन्द्र

जिन बस्तियों में एक किलोमीटर के अर्द्धव्यास में विद्यालय उपलब्ध नहीं है और वहां 6 से 11 वयवर्ग के कम से कम 30 बच्चे उपलब्ध हों, तो वहाँ विद्या केन्द्र स्थापित किया जा सकता

है। इन केन्द्रों पर कक्षा 1 और 2 की शिक्षा उपलब्ध करायी जायगी। इन केन्द्रों में परिषदीय पाठ्य–पुस्तकें प्रयोग में लायी जाती हैं।

बालशाला

बालशाला की स्थापना 3-11 वय वर्ग के बच्चों के लिए की गई है। बड़े बच्चे जो अपने घर में छोटे भाई– बहनों की देखभाल करने के करण स्कूल नहीं जा पातें हैं वे उन बच्चों को अपने साथ लाकर बालशाला में रखते हैं तथा प्राथमिक स्तर की शिक्षा हेतु एक अनुदेशक/अनुदेशिका तथा 6 वर्ष से कम उम्र के बच्चों की देखभाल के लिये एक सहायिका की सेवा उपलब्ध है।

शिक्षा घर

शिक्षा घर उन छोटी, असेवित स्थल बस्तियों में खोले जाते हैं। जहाँ प्राथमिक विद्यालय नहीं हैं। इनमें 6-11 वय वर्ग के वे सभी प्राथमिक स्तर की शिक्षा ग्रहण करेंगे जो स्कूल से बाहर हैं। इन वैकल्पिक विद्यालयों में बच्चों को समान स्तर की गुणवत्तापरक शिक्षा देने की व्यवस्था है। शिक्षाघर के संचालन एवं शिक्षण कार्य हेतु अनुदेशक की व्यवस्था की है।

प्रहर पाठशाला

प्रहर पाठशाला की व्यवस्था 9-14 वय वर्ग की बालिकाओं के लिये की गयी है। बालिकाओं को प्राथमिक स्तर की शिक्षा उपलब्ध कराने के साथ –साथ बड़ी लड़कियों को कार्यात्मक शिक्षा जैसे सिलाई, कढ़ाई, बुनाई, संगीत आदि कौशल देने की भी व्यवस्था है। इस पाठशाला में एक अनुदेशक शिक्षा कार्य हेतु तथा अल्प कौशल विकास हेतु आमंत्रित किये जायेगें।

मक़तब/मदरसा का सुदृढ़ीकरण

इनकी व्यवस्था मुख्यतः अल्पसंख्यक समुदाय के बच्चों, विशेषकर बालिकाओं के लिये की गयी है। इनमें उसी समुदाय से अनुदेशक/अनुदेशिका को आमंत्रित किया जायेगा, जहां मक़तब/मदरसा स्थापित है। इनमें सम्बंधित अल्पसंख्यक समुदाय को प्राथमिक स्तर पर जीवनोपयोगी शिक्षा प्रदान की जायेगी।

तीसरा दिन

अनुदेशक की पृष्ठभूमि

- यथासंभव अनुदेशक उसी स्थान एवं समुदाय का व्यक्ति होता है।
- अनुदेशक की न्यूनतम शैक्षिक योग्यता हाई स्कूल निर्धारित है।
- स्थानीय होने के नाते वह गांव की विशेषताओं/स्थानीय समस्याओं को जानता है।
- उसे उन बच्चों की पृष्ठभूमि की जानकारी होती है जो लक्ष्य समूह है।
- समुदाय के विषय में भी विशेष जानकारी रहती है।
- समुदाय के सहयोगी व्यक्तियों की पहचान भी उसे रहती है।

अनुदेशक के कार्य एवं दायित्व

- केन्द्र वाले स्थान/समुदाय से परिचित होना।
- लक्ष्य समूह के बच्चों की जानकारी रखना।
- इस हेतु एक पंजिका 'बाल गणना' बनायी जा सकती है तथा प्रत्येक वर्ष उसे अपडेट किया जाये।
- गांव समुदाय में ऐसे व्यक्तियों की पहचान की जाये जो केन्द्र संचालन में सहयोग कर सकते हैं।
- समुदाय के सहयोग से केन्द्र संचालन हेतु स्थल चयन करना होगा।
- गांव के सामाजिक कार्यो में प्रतिभाग/सहभागिता
- ग्राम शिक्षा समिति की बैठकों में प्रतिभाग।
- अपनी समस्याओं जैसे– सामग्री क्रय, मानदेय वितरण, अन्य शैक्षिक कठिनाइयों की चर्चा कर उनके समाधान खोजने का प्रयास।
- अभिभावकों से लगातार संपर्क कर बच्चों एवं केन्द्र के विषय में विचार–विमर्श केन्द्र के सभी बच्चों के शैक्षिक स्तर की जानकारी।

- अभिभावकों की केन्द्र पर बैठक आयोजित करना एवं निम्न बिन्दुओं पर भागीदारी बढ़ाने के प्रयास करना।
- बच्चों का मूल्यांकन
- केन्द्र में बच्चों की उपस्थिति
- साफ–सुथरा केन्द्र स्थल
- बच्चों की स्वच्छता
- राष्ट्रीय पर्व, महापुरूषों की जयंति पर कार्यक्रम आयोजित कर समुदाय को जोड़ना।
- आयोजित होने वाले प्रशिक्षण, कार्यशाला में प्रतिभाग करना।
- केन्द्र संचालन संबंधी समय–समय पर दिये गये निर्देशों का पालन करना।
- नवीन शिक्षण विधियों के आधार पर शिक्षण कार्य करना।
- संकुल प्रभारी (NPRC-C) द्वारा अकादमिक सहयोग प्राप्त करना
- केन्द्र संचालन हेतु सामग्री का रखरखाव एवं उपयोग।
- बच्चों को उपलब्ध कराई जाने वाली सामग्री का वितरण सुनिश्चित करना।
- बच्चों के साथ भेदभाव एवं सहृयदतापूर्ण व्यवहार।
- समयानुसार बच्चों को प्राथमिक विद्यालय में नामांकित कराना और यह भी जानना कि कोई बच्चा पुनः ड्राप आउट तो नहीं हो रहा है।
- बच्चों को स्थानीय परिवेश की जानकारी हेतु गांव/तालाब/बाग़ दर्शनीय स्थल आदि का भ्रमण कराना।
- केन्द्र संबंधी अभिलेखों को सुरक्षित रखना।
- बच्चों को खेल/गतिविधियाँ करवाना।
- बच्चों में नैतिक मूल्यों एवं देश–प्रेम की भावनाओं का विकास करना।

आदर्श अनुदेशकों के गुण

वैकल्पिक शिक्षा केन्द्र के अनुदेशकों में अपेक्षित गुणों से परिचित कराने एवं मनोवृत्ति में सकारात्मक परिवर्तन हेतु यह चर्चा उपयोगी होगी।

प्रतिभागियों को चार समूहों में बाँट कर उपरोक्त मुद्दे पर चर्चा करने आवश्यकतानुसार समूह में उनकी मदद भी करें। प्रयास करें कि छोटे समूह में सभी प्रतिभागी बोलें। चर्चा में भाग लें।

चर्चा में निम्न गुण प्रतिभागी बता सकते हैं:–

- समझदार
- अच्छा वक्ता
- समय का पाबन्द
- ईमानदार
- कर्तव्यनिष्ठ
- सहनशील
- चरित्रवान
- अच्छा गायक
- बाल मनोविज्ञान का जानकार
- विषय वस्तु का ज्ञाता आदि

प्रयास द्वारा गुण अर्जित किये जा सकते हैं। यह बात स्पष्ट की जाय कि प्रतिभागियों को आदर्श अनुदेशक के अधिकाधिक गुण स्वयं में विकसित करने के प्रयास करने चाहिये।

स्थल चयन

वैकल्पिक शिक्षा केन्द्र हेतु स्थल का चयन करते समय निम्न बिन्दुओं को ध्यान में रखना होगा :

- केन्द्र स्थल ऐसी जगह हो जहाँ आसानी से पहुँच सकें।
- केन्द्र स्थल पर बच्चों के बैठने एवं खेलने के लिये पर्याप्त स्थान हो, पेयजल एवं शौचालय की व्यवस्था हो।
- केन्द्र स्थल सार्वजनिक एवं विवाद रहित हो।
- केन्द्र स्थल स्वच्छ एवं शांत प्राकृतिक वातावरण में हो।
- बाजार, दुकानों अथवा शोर पैदा करने वाले वातावरण से दूर होना चाहिये।
- केन्द्र में स्वच्छ हवा, पर्याप्त प्रकाश की व्यवस्था हो। सीलनयुक्त कमरे नहीं होना चाहिये।
- कड़ी धूप और बरसात से बचने की व्यवस्था हो।

चौथा दिन

वैकल्पिक शिक्षा में समुदाय की सहभागिता

वैकल्पिक शिक्षा केन्द्रों के विधिवत संचालन में समुदाय की भूमिका महत्वपूर्ण है।

- समुदाय द्वारा बच्चों को केन्द्र में पढ़ने के लिये प्रेरित करना।
- अभिभावकों द्वारा केन्द्र संचालन के समय बच्चों से कोई काम न कराना।
- केन्द्र जाने हेतु बच्चों को तैयार करना।
- शिक्षा केन्द्र हेतु स्थान उपलब्ध कराना।

- केन्द्र की गतिविधियों में भाग लेना।
- केन्द्र का नियमित संचालन कराना।
- अनुदेशक द्वारा आयोजित बैठक में भागीदारी।
- अनुदेशक के नियमित मानदेय भुगतान में मदद करना।
- बच्चों को सीखने – सिखाने में सहयोग करना।
- मूल्यांकन में सहयोग करना।

उक्त के अतिरिक्त निम्न लिखित बिन्दुओं पर समुदाय की सहभागिता सुनिश्चित की जाती है:–

सुविधा विहीन/अपवंचित वर्ग–

- समुदाय में एक ऐसा वर्ग भी है जो सुविधाविहीन है।
- उस वर्ग के बच्चे प्रायः शिक्षा से वंचित रहते हैं। उन्हें शिक्षा की मुख्यधारा से जोड़ना अनिवार्य है।
- समुदाय को चाहिये कि केन्द्र पर ऐसे बच्चों को लायें।
- केन्द्र के समय बच्चों को पूरी अवधि तक पढ़ने लिखने का अवसर प्राप्त हो।
- समुदाय बच्चों के अभिभावकों को शिक्षा के प्रति जागरुक करे।

बालिकायें:–

- बालिकाओं की शिक्षा हेतु आपस में बातचीत करें।
- बालिकाओं को केन्द्र में भेजना।
- उनसे शिक्षण के समय घर के काम न कराना।

- बालिकाओं की आवश्यकतानुसार अपेक्षित माडल का प्रस्ताव करना।
- केन्द्र पर गतिविधियों में प्रयोग होने वाली सामग्री जैसे सुई, धागा, रंग, फ्रेम, ऊन, कपड़ा आदि की व्यवस्था कराना।
- समय–समय पर आयोजित बैठकों/त्योहार/उत्सव आदि में बालिका शिक्षा पर जोर देना।
- बालिकाओं को मुख्यधारा से जोड़ने/प्राथमिक विद्यालयों में नामांकन कराने में मदद करना।

अल्पसंख्यक

- अल्पसंख्यक वर्ग के बच्चे प्राथमिक शिक्षा से कम ही जुड पाते हैं।
- वे अधिकतर मकतब/मदरसों में दीनी तालीम ग्रहण करते हैं।
- इस वर्ग की बालिकाओं को सामाजिक रुढ़िवादिता के कारण नहीं भेजा जाता।
- विद्यालय जाने वाली बालिकाओं को पर्दाप्रथा के कारण किशोरावस्था में पहुँचते ही विद्यालय छोड़ देना पड़ता है।
- अधिक बच्चे होने के कारण भी वे प्रायः प्राथमिक शिक्षा से नहीं जुड पाते।
- पढ़ने की उम्र में ही किसी न किसी रोजगार में लगा दिये जाते हैं।
- इस वर्ग के सभी बच्चों को प्राथमिक शिक्षा से जोड़ना होगा।
- हमें उनके बीच जाकर शिक्षा के महत्व को बताना होगा।
- उनके बच्चों को केन्द्र में लाने का प्रयास करना होगा।
- मकतब आदि में पढ़ने वाले बच्चों को भी धार्मिक शिक्षा के इतर प्राथमिक शिक्षा देना होगा।

- उन्हें मुख्यधारा से जोडने हेतु विद्यालयों में दाखिला दिलाना।
- समुदाय को जागरुक करना होगा, उन्हें विश्वास में लेना पडेगा। इसके लिये जरुरी है कि समुदाय की नियमित बैठक हो। अनुदेशक समुदाय के साथ मिलकर केन्द्र सम्बन्धी योजनायें बनायें। समस्यायें और उपलब्धियाँ भी सबको बतायी जायें।

अभिभावकों की सहभागिता

केन्द्र में अभिभावकों की सहभागिता सुनिश्चित करने के लिए निम्नलिखित प्रयास/कार्य किये जा सकते हैं।

- केन्द्र पर अभिभावकों का आयोजन किया जाये।
- उनमें अभिभावकों को आमंत्रित किया जाये।
- प्रत्येक बच्चे के अभिभावक से लगातार सम्पर्क।
- बच्चों की प्रगति, समस्याओं से उन्हें अवगत कराना।
- अनुदेशकों को सामाजिक कार्यो में अपनी सहभागिता करनी होगी।
- बच्चों के मूल्यांकन में अभिभावक हमारी मद्‌द कर सकते हैं।
- उनको केन्द्र में बुलाकर उनके द्वारा कहानी/कविता आदि भी बच्चों को सुनवायी जा सकती है।
- उनके द्वारा केन्द्र एवं बच्चों की भौतिक आवश्यकताओं की पूर्ति भी करायी जा सकती है।
- समय सारणी निर्माण में वे हमारे मद्‌दगार हो सकते हैं।

ग्राम शिक्षा समिति

वी.ई.सी की सहभागिता

ग्राम शिक्षा समिति का सहयोग लेने से पहले उसका स्वरूप जानना ज़रूरी होगा।

ग्राम शिक्षा समिति में ५ पदाधिकारी होते हैं।

ग्राम प्रधान	–	अध्यक्ष	
1. ग्राम पंचायत का ज्येष्ठतम् प्रधानाध्यापक	–	सचिव	
2. अभिभावक 2 पुरूष	–	सदस्य	सहायक बेसिक शिक्षा अधिकारी द्वारा नामित
3. अभिभावक 1 महिला	–	सदस्य	

- ग्राम शिक्षा समिति की केन्द्र संचालन में महत्वपूर्ण भूमिका है।
- केन्द्र संचालन हेतु प्रस्ताव उपलब्ध कराना।
- अनुदेशक का चयन करना
- शिक्षण सामग्री, पाठ्य पुस्तक एवं मानदेय उपलब्ध कराना।
- अपवंचित बच्चों के नामांकन एवं ठहराव में सहयोग देना।
- बच्चों को विद्यालय से जोड़ने में मद्द करना।
- अनुदेशक एवं बच्चों की नियमित उपस्थिति सुनिश्चित करना।
- बच्चों के मूल्यांकन में सतत् मूल्यांकन में सहयोग करना।

अन्य संस्थायें (NPRC, BRC, ARG/DRG)

- न्याय पंचायत/ब्लाक समन्वयक, ज़िला संदर्भ समूह एवं डायट तथा ज़िला परियोजना कार्यालय के अभिकर्मियों द्वारा समय–समय पर केन्द्र को अकादमिक अनुसमर्थन।
- सहायक शिक्षण सामग्री के निर्माण एवं प्रयोग में सहयोग।
- बच्चों को मुख्यधारा में जोड़ने हेतु प्रयास करना।
- प्रधानाध्यापको/अध्यापकों द्वारा भी आदर्श पाठ पढ़ाया जाना/ बच्चों को केन्द्र पर लाने में मद्द।

- मूल्यांकन क्यों? और कैसे? अन्य विषयों पर भी मासिक बैठक/प्रशिक्षण आदि में चर्चा।
- स्थानीय स्वयंसेवी संस्थाओं द्वारा केन्द्र को सहयोग।

पांचवा दिन

केन्द्र प्रबन्धन

बच्चों का प्रवेश

अनुदेशक/आचार्य जी प्रशिक्षण प्राप्त करने के पश्चात बस्ती/गांव में भ्रमण एवं सम्पर्क के समय लक्ष्य समूह के बच्चों को चिन्हित करेगा। केन्द्र पर प्रवेश लेने वाले बच्चों को सम्मान एवं उत्साह जनक वातावरण बनाने का प्रयत्न। प्रवेश लेते समय अनुदेशक/आचार्य जी द्वारा बच्चे के बारे में निम्न जानकारी रखनी होगी।

क्र.सं.	नाम	अभिभावक पिता/माता	जन्मतिथि आयु	जानकारी का स्तर बच्चा क्या–2 जानता है?

केन्द्र की सज्जा

- केन्द्र स्थल की स्वच्छता कैसे ? स्थानीय परिस्थितियों के अनुरूप (समूह में चर्चा)

  कुछ बिन्दु – 1. फर्श की गोबर मिट्टी से लिपाई/ झाडू से सफाई।

  2. मिट्टी की दीवार को मिट्टी से चिकना करना। 3. पक्की दीवार को चूना इत्यादि से। 4. सूचना पट्ट तथा ब्लैक बोर्ड कालिक/ काले अथवा हरे पेण्ट से बनाये जा सकते हैं।

- कक्षा–कक्ष की सज्जा कैसे? स्थानीय उपलब्ध सामग्री का कक्षा–कक्ष की सजावट के लिए उपयोग पर चर्चा।

  कुछ बिन्दु – 1. दीवारों पर गिनती चार्ट, अक्षर चार्ट, शब्द चार्ट, नक्शा इत्यादि टांग कर

2. बच्चों की रूचि वाली वस्तुएं एवं आकृतियों का उपयोग। जैसे फलों, जानवरों, फूलों, अक्षरों एवं गिनतियों की आकृति चार्ट पेपर से काटकर सजाया जा सकता है।

3. कक्षा–कक्ष के एक तरफ सभी पाठ्य सामग्री क्रम से सुव्यवस्थित रखा जाना। इसके लिये जूते या कपड़े के दफ्ती वाले डिब्बों का प्रयोग किया जा सकता है।

(आदर्श प्रस्तुतिकरण प्रशिक्षक द्वारा करके दिखाया जाय)

बच्चों की स्वच्छता कैसे? समूह में चर्चा

- बच्चों में स्वच्छ रहने की आदत का विकास करना
- शरीर की स्वच्छता – दांत, जीभ, नाखून इत्यादि।
- कपड़ों की स्वच्छता
- पाठ्य पुस्तक/ अभ्यास पुस्तिकाओं एवं बस्ते की स्वच्छता एवं रखरखाव
- बच्चों को सुव्यवस्थित ढ़ंग से बैठने की आदत डालना।
- केन्द्र के बच्चों को उनकी दक्षता स्तर के अनुसार समूहों में –वृत्ताकार घेरे ; अर्धचन्द्राकार या यू आकृति में बैठाना।

चित्र

कक्षा–कक्ष में बच्चों के बैठने की व्यवस्था कैसी हो? समूह में चर्चा

चित्र

शैक्षिक सामग्री – सूची

अनुदेशक के लिये 1. ब्लैक बोर्ड 2. चाक 3. डस्टर 4. छात्र–उपस्थिति पंजिका 5. अध्यापक उपस्थिति पंजिका 6. स्टाक (भण्डार) पंजिका 7. डायरी 8.प्रवेश पंजिका 9. अनुदेशक डायरी 10.टीन का बक्सा ताला सहित 11. मानचित्र– भारत वर्श, उत्तर प्रदेश जनपद 12.गिनती चार्ट, अक्षर चार्ट।

बच्चों के लिए

1. पाठ्य पुस्तकें, 2.स्केल, 3.पेंसिल चाक, 4 कापी, 5. पेंसिल (ग्रेफाइट) 6.खेल सामग्री–रिंग फुटबाल, रस्सी (कूदने वाली), 7. एवेस्कस (गिनत ारा) 8. चटाई प्लास्टिक (6x3) (बैठने के लिये)

अन्य सामग्री – लोटा, बाल्टी, अतिरिक्त चटाई एवं अन्य शैक्षिक तथा केन्द्र हेतु उपयोगी सामग्री ग्रामवासियों द्वारा सहयोग से उपलब्ध करायी जा सकती है।

शिक्षण अधिगम सामग्री (टी.एल.एम) – टी.एल.एम निर्माण पर चर्चा

१. प्राकृतिक

२. मानव निर्मित

शिक्षक द्वारा | छात्रों द्वारा | शिक्षक एवं छात्र दोनों द्वारा मिलकर

स्व अधिगम सामग्री निर्माण पर चर्चा – (ऋषिवैली माडल पूर्णतया स्व अधिगम सामग्री पर निर्भर है। अतः इस माडल की पाठ सामग्री के सहयोग से स्व अधिगम सामग्री निर्माण पर चर्चा एवं प्रस्तुतिकरण तथा अभ्यास कराया जा सकता है।)

- सहायक सामग्री का उपयोग – प्रदर्शन द्वारा
- सहायक सामग्री निर्माण – 'कबाड़ से जुगाड़' पुस्तक की सहायता ली जा सकती है।
- एक सत्र में निर्माण का अभ्यास कराया जाय।
- सहायक सामग्री के रखरखाव पर कुछ निर्देश/चर्चा।

प्रशासनिक सहयोग तन्त्र

वैकल्पिक शिक्षा केन्द्रों के संचालन, पर्यवेक्षण एवं मूल्यांकन हेतु जनपद से लेकर ग्राम स्तर तक संचालित तन्त्र से परिचय कराना।

- **डायट – मेंटर** – स्कूलों की भांति वैकल्पिक शिक्षा केन्द्रों को शैक्षिक सपोर्ट देने वाला डायट का प्रतिनिधि व्यक्ति।
- **जिला समन्वयक (वै.शि.)** – जनपद में वैकल्पिक शिक्षा के अन्तर्गत सेचालित समस्त कार्यक्रम को शैक्षिक एवं प्रशासनिक सहयोग देना। कार्यक्रम के सफल संचालन हेतु रणनिति एवं व्यवस्था देना।
- **सहायक बेसिक शिक्षा अधिकारी** – विकास खण्ड स्तर पर केन्द्र को प्रशासनिक एवं शैक्षिक सहयोग प्रदान करना।
- **ब्लाक समन्वयक/सहसमन्वयक** – ब्लाक स्तर के केन्द्रों को शैक्षिक सपोर्ट केन्द्रों का अनुश्रवण एवं केन्द्रों पर आदर्श पाठों की प्रस्तुतिकरण करना।
- **न्याय पंचायत समन्वयक** – केन्द्र का पर्यवेक्षण/ केन्द्र सम्बंधी सूचनाओं का संकलन एवं प्रेषण। केन्द्रों को शैक्षिक सहयोग देना। आदर्श पाठ प्रस्तुतिकरण/वातावरण सृजन।
- **प्रधान/प्रधानाध्यापक** – ग्राम सभा में स्थित केन्द्रों के लिये स्थल, पेयजल, शौचालय, छप्पर इत्यादि उपलब्ध करना/सहयोग करना। अनुदेशक का चयन, अनुदेशक का मानदेय वितरण तथा गांव के अभिभावकों को जागरूक कर केन्द्र पर बच्चों को भेजने के लिये प्रेरित करना।

अभिलेखों का रखरखाव

- **प्रवेश पंजिका** – प्रथम बार प्रवेश लेने वाले बच्चों के बारे में पूरी जानकारी संकलित होगी।
- **छात्र उपस्थिति पंजिका** – प्रतिदिन कक्षा प्रारम्भ करने से पहले छात्रों की उपस्थिति अंकित की जायेगी।
- **आगन्तुक/भ्रमण पंजिका**

अनुदेशक दैनन्दिनी – अनुदेशक प्रतिदिन कक्षा–कक्ष के अन्दर एवं बाहर किये गये कार्यो को लिपिबद्ध करेगा। बच्चों की उपलब्धि को दैनन्दिनी में अंकित करेगा। डायरी में सभी कुछ बहुत विस्तृत न होकर संक्षिप्त एवं संकेतात्मक होगा।

भण्डार पंजिका – विभिन्न स्रोतों द्वारा उपलब्ध करायी गयी सामग्री का विवरण एवं संख्या भंण्डार पंजिका में अंकित होगी।

मूल्यांकन/प्रगति पंजिका – सभी छात्रों के सतत् मूल्यांकन, मासिक, त्रैमासिक एवं अर्द्धवार्षिक एवं वार्षिक मूल्यांकन सम्बन्धि जानकारी इस पंजिका में अंकित होगी।

केन्द्र का बजट

मानदेय – रू.1000/– प्रतिमाह प्रति अनुदेशक

शैक्षिक सामग्री – रू.2350/– प्रतिकेन्द्र प्रथम वर्ष में

आकस्मिक निधि – रू.450/– केन्द्र प्रारम्भ के द्वितीय वर्ष से प्रतिवर्ष

पाठ्य पुस्तकों हेतु – रू.1000/– प्रतिवर्ष प्रतिकेन्द्र

केन्द्र प्रबंधन

अनुदेशक प्रशिक्षण पाने के पश्चात ग्राम पंचायत में स्थित प्राथमिक विद्यालय के प्रधान अध्यापक से संपर्क करेंगे। बालगणना पंजिका/ माइक्रोप्लानिंग (सूक्ष्म नियोजन) द्वारा विद्यालय से बाहर ६–११ आयु वर्ग के बच्चों की सूची प्राप्त करेंगे। इस सूची के आधार पर प्रा. शि. से वंचित बच्चों का नामांकन अपने केन्द्र में करेंगे।

- उन्हे अपने केन्द्र में ऐसी क्षमता विकसित करना होगी जो बच्चों को अपनी ओर आकर्षित कर सके। केन्द्र का व्यवहार,, पढ़ाने की विधियां, विचार, दृष्टिकोण लक्ष्य समूह की जरूरतों के अनुरूप हो।
- केन्द्र में पिछड़े वर्ग के बच्चों, विशेषकर लड़कियों को प्राथमिकता दी जाये।
- केन्द्र से अपेक्षा की जाती है कि वे औपचारिक और अनौपचारिक शिक्षा के बीच कड़ी का काम करें।

वातावरण निर्माण/ केन्द्र की साजसज्जा

- केन्द्र में बच्चे भिन्न–भिन्न आयु वर्ग के, बौद्धिक स्तर के तथा भिन्न–भिन्न शैक्षिक योग्यता के होंगे। उनको एक ही कक्षा में पढ़ाना अधिक उपयोगी नहीं होता।
- अनुदेशक उनकी इन विभिन्नताओं को आधार बनाकर तीन, चार छोटे समूहों में बांटकर पढ़ाई लिखाई का कार्य करें।
- केन्द्र के बच्चे तेजी से पाठ्यक्रम पूरा कर सकते हैं। क्योकि वे अधिक उम्र के होते हैं या बीच में पढ़ाई छोड़े हुए होते हैं। उनमें योग्यतानुसार एक वर्श में १–२ कक्षाओं का पाठ्यक्रम पूरा कराया जा सकता है।

हमारी शिक्षण सामग्री

- सीखने –सिखाने की क्रिया में आप बहुत से उपकरणों की सहायता लेते हैं, जैसे – चाक, डस्टर, यामपट्ट, च ार्ट माडल आदि।
- इन उपकरणों में कुछ तो मुद्रित (यानि छपे हुए) होते हैं और कुछ अमुद्रित।
- इन मुद्रित अमुद्रित सामग्रियों के माध्यम से आप अपनी बात दूसरों तक पहुंचाने में सफल होते हैं।
- दूसरा व्यक्ति आपकी बात को सफलता पूर्वक ग्रहण करता है।
- इस तरह सीखने–सिखाने की क्रिया में जो वस्तुएं हमारी सहायता करती हैं उन्हें हम शिक्षण सामग्री कहते हैं।
- सीखने–सिखाने की क्रिया में आप भी लगें है। इसलिये आओ कुछ शिक्षण सामग्रियों के बारे में विस्तार से जानें।

पाठ्यक्रम

- पाठ्यक्रम भी एक शिक्षण सामग्री है।
- पाठ्यक्रम में हर कक्षा के लिए सभी विषयों को सीखने सिखाने वाली दक्षताओं का विवरण होता है
- कौन सी दक्षता कितने समय में विकसित किया जाना है। इसका भी उल्लेख पाठ्यक्रम में रहता है।
- हमारें प्रदेश में प्राथमिक शिक्षा के लिये बेसिक शिक्षा परिशद, उत्तर प्रदेश द्वारा प्राथमिक स्तरीय पाठ्यक्रम (१९९९) प्रकाशित किया गया है।
- इस पाठ्यक्रम में सीखने–सिखाने वाली विशय वस्तु को निम्नवत् दिया गया है–

मातृभाषा –हिन्दी

कक्षा–1

क्र.	कौ▯ाल	विषय वस्तु	क्रिया कलाप	मूल्यांकन
1	समझते हुए सुनना तथा बोलना	मातृभाशा हिन्दी की सभी ध्वनियां उनकी पहचान तथा उनमें अन्तर	घर परिवार पशु पक्षी तथा खेल खिलौने	परिचित विषय वस्तु दृश्य आदि पर वार्तालाप एवं प्रश्नोत्तर कण्ठस्थ कविता, कहानी, चुटकुले सुनना

- पाठ्यक्रम से अपनी बात कहने के नये नये तरीकों तथा गतिविधियों को सोचने समझने की सम्भावनाएं बढ़ती हैं।
- पाठ्यक्रम में बच्चे की कक्षा, उसकी आयु तथा उसके ग्रहण करने की शक्ति–क्षमता के अनुसार विषय वस्तु का विस्तार रहता है।

इसलिये आवश्यक है कि शिक्षण से पूर्व हम अपने पाठ्यक्रम को ———— ें

निर्देश

- प्रशिक्षण के समय पाठ्यक्रम उपलब्ध रहे। प्रतिभागियों के समूह में निम्न बिन्दुओं पर चर्चा की जाय।

चर्चा बिन्दु

- पाठ्यक्रम से हमें क्या जानकारी मिलती है ?
- पाठ्यक्रम और पाठ्य पुस्तक में क्या अन्तर है ?
- कक्षा–२, मातृभाषा, हिन्दी विषय में कौन–कौन सी दक्षताएं दी गई हैं ?
- कक्षा ५ – हिन्दी विषय में लिखना दक्षता के लिए किन–किन क्रियाकलापों का उल्लेख किया गया है ?
- कक्षा ३ गणित विषय में कुल कितनी दक्षताएं दी गई हैं ?
- पाठ्यक्रम में विषय का मासिक विभाजन किस पृष्ठ से किस पृष्ठ तक किया गया है?
- मासिक विभाजन की आवश्यकता क्यों है ?

पाठ्य पुस्तकें

- उक्त बिन्दुओं पर चर्चा के बाद आप यह जान गये होंगे कि पाठ्यक्रम में दिये गये विषय वस्तु का ज्ञान कराने के लिए पाठ्य पुस्तकों का निर्माण किया जाता है।
- कक्षा में हर एक विषय की क्या–क्या बात पढ़ानी है– पाठ्य पुस्तकों में पाया जाता है।

- पाठ्य पुस्तकें पाठ्यक्रम के आधार पर लिखी जाती हैं।
- आप बच्चों को पाठ्य पुस्तकों की मदद से पढ़ाते हैं।
- पाठ्य पुस्तकें ज्ञानार्जन का एक माध्यम हैं।
- छोटी कक्षाओं में पाठ्य पुस्तकों की संख्या कम और बड़ी कक्षाओं में अधिक होती जाती है।
- छोटी कक्षाओं में विषय सरल तरीके से प्रस्तुत किया जाता है।
- पाठ्य पुस्तकों के आकर्षक, रोचक, सरल तथा स्पष्ट होने पर समझने–समझाने में वे अधिक सहायक होती है।

इसलिए आवश्यक है कि शिक्षण से पूर्व हम अपनी पाठ्य पुस्तकों को

कक्षावार प्राथमिक स्तर की पाठ्य पुस्तकें

कक्षा एक	**कक्षा 2**	**कक्षा 3**	**कक्षा 4**	**कक्षा 5**
1. भाषा किरण एक	1 भाषा किरण भाग–2 2. बाल गणित 2 कक्षा–2	1. भाषा किरण भाग–3 2. बाल गणित कक्षा–3 3 हमारा परिवेश कक्षा–3 4. एलीमेन्ट्री इग्लिश पार्ट–1 5. संस्कृत पीयूषम कक्षा–3	1. भाषा किरण भाग–4 2. बाल गणित कक्षा–4 3 हमारा समाज कक्षा–4 4. ज्ञान विज्ञान कक्षा–4 5 एलीमेन्ट्री इग्लिश पार्ट–2 6. संस्कृत पीयूषम कक्षा–4	1. भाषा किरण भाग–5 2. बाल गणित कक्षा–5 3 हमारा समाज कक्षा–5 4. ज्ञान विज्ञान कक्षा–5 5 एलीमेन्ट्री इग्लिश पार्ट–3 6. संस्कृत पीयूषम कक्षा–5

निर्देश

१. कक्षा एक की पाठ्य पुस्तक प्रारम्भ में बच्चे नहीं पढ़ सकते। इसलिये आवश्यक है कि अनुदेशक पाठ्य पुस्तक में दिये गये निर्देश एवं अभ्यास को स्वयं अच्छी तरह पढ़कर समझें।

२. निर्देशानुसार पाठ पढ़कर सुनायें और कार्य करायें।

३. सभी कक्षाओं की पाठ्य पुस्तकों के पाठों में फुट–नोट में तथा पाठ के अन्त में निर्देश एवं अभ्यास दिये गये हैं। अनुदेशक इन्हें अच्छी तरह स्वयं समझ कर, बच्चों से कार्य करायें।

- पाठ्य पुस्तकों में दी गई विषय वस्तु को समझने तथा शिक्षकों की सहायता के लिए शिक्षक सन्दर्शिकाएं बनी हैं।
- इसलिये इन शिक्षक संदर्शिकाओं को जानना–समझना भी आवश्यक हैं।
- तो आओं इन्हें जाने।

शिक्षक सन्दर्शिकाएं

- शिक्षक सन्दर्शिकाओं में पाठ्य पुस्तक का प्रत्येक पाठ दिया गया है।
- प्रत्येक पाठ से संबंधित विचार, पूर्वज्ञान तथा शिक्षण के लिए पाठ में लगने वाले समय की जानकारी दी गई है।
- इसमें शिक्षण अधिगम सामग्री तथा पाठ से संबंधित अन्य आवश्यक तैयारी का विवरण दिया गया है।
- पाठ् की शिक्षण योजना का विकास किस विधा से करना है इसकी भी जानकारी दी गई है।
- पाठ पढ़ाने के पूर्व की तैयारी, पाठ के बीच में विधियों एवं सामग्री का उपयोग तथा पाठ के अन्त में की जाने वाली गतिविधियों की जानकारी दी गयी हैं
- सीखने सिखाने की क्रिया को रोचक, सरल बनाने का प्रयास एवं सुझाव शिक्षक संदर्शिकाओं में हैं।
- इसलिये इन शिक्षक सन्दर्शिकाओं के उपयोग से हमारा शिक्षण प्रभावी बनता है।

नोट – प्राथमिक स्तर की सभी पाठ्य पुस्तकों पर आधारित कुल १४ शिक्षक संदर्शिकाएं उपलब्ध हैं।

गतिविधि–१

अनुदेशक पाठ्यक्रम एवं पाठ्य पुस्तकों तथा संदर्शिकाओं को अच्छी तरह समझ सकें, इस आशय से पाठ्यक्रम में दी गई दक्षताओं का उल्लेख करते हुए, इनको विकसित करने वाले पाठों का विवरण लिखने के लिए कहा जाय। जैसे–

पाठ्यक्रम में दी गई दक्षता	पाठ का नाम	पाठ्य पुस्तक का नाम
समझते हुए सुनना तथा बोलना	पाठ–2 बाग पाठ–3 तालाब गणित पाठ–4 हुआ सवेरा	भाषा किरण – एक
सुनना– बोलना पढ़ना– लिखना	पाठ –2 पंच परमेश्वर पाठ –4 सरिता आदि	भाषा किरण – 5

प्रतिभागी दो या तीन समूहों में बंटकर अलग–अलग विषय की पाठ्य पुस्तक तथा शिक्षक संदर्शिकाओं/पाठ्यक्रम की सहायता से उक्तवत् अभ्यास करें।

उक्त गतिविधि या अभ्यास के माध्यम से अनुदेशक पाठ्यक्रम, पाठ्यपुस्तक एवं शिक्षक संदर्शिकाओं का महत्व समझकर कक्षा शिक्षण में इनका उपयोग कर सकेगें।

अन्य शिक्षण सामग्री

- मुद्रित शिक्षण सामग्री के बारे में आप जान चुके हैं।
- पाठ्य पुस्तकों के अतिरिक्त पत्र–पत्रिकाएं– कथा कहानी भी हमारे लिये उपयोगी हो सकती है।
- श्यापट्ट, चाक, माडल, चार्ट खिलौने, रेडियो टू–इन वन, प्रोजेक्टर तथा टेलीविजन आदि भी पठन–पाठन सामग्री के रूप में प्रयोग किये जाते हैं।
- रेडियो और टी.वी पर बच्चों तथा शिक्षकों के लिए शैक्षिक कार्यक्रम प्रसारित हो रहे हैं।
- इसलिये आप इन्हे जाने और इनका लाभ उठायें

शैक्षिक प्रसारण

टी.वी. प्रसारण समय	लखनऊ दूरदर्शन से – उ0प्र0–16 डी.डी. के स्थान पर किसके लिये
प्रातः 5.15 से 6 बजे	प्राथमिक शिक्षकों के लिए
प्रातः 10.30 से 11 बजे	प्राथमिक कक्षाओ के लिए – सोमवार से गुरूवार तक
प्रातः 10.30 से 11 बजे	प्राथमिक शिक्षकों के लिए – शुक्रवार
सायं 5 से 5.30 बजे	प्राथमिक कक्षाओ के लिए केवल मंगलवार

रेडियो प्रसारण – प्रदेश के आकाशवाणी केन्द्रों से

दोपहर 12.10 से 12.30	सोमवार – प्राथमिक कक्षाओं के लिए मंगलवार कक्षा 6 के लिए बुद्धवार कक्षा 7 के लिए गुरूवार कक्षा 8 के लिए शुक्रवार कक्षा 9 एवं 10 के लिए शनिवार प्राथमिक स्तर के अध्यापको के लिए

ज्ञान दर्शन (शैक्षिक दूरदर्शन प्रसारण चैनल)

24 घंटे शिक्षा के कार्यक्रम प्रसारित हो रहे हैं।

सातवां अध्याय

विषय– सीखने सिखाने की प्रक्रिया

बच्चों कों भाषा, गणित एवं पर्यावरण सिखाने से पूर्व यह समझना आवश्यक है कि बच्चों के सीखने की प्रक्रिया क्या होती है? बच्चों के सीखने में सहायक एवं बाधक तत्व कौन से हैं? बच्चे किस माहौल में तेजी से सीखते हैं? उपरोक्त विषय पर समझ विकसित करने हेतु निम्नांकित बिन्दुओं पर चर्चा करें।

चर्चा बिन्दु :

- प्रतिभागियों को प्रोत्साहित करें कि वे अपने जीवन की कोई एक ऐसी घटना का वर्णन करें, जिससे उन्होने कुछ सबक सीखा हो ।
- पतिभागियों के अनुभवों को सुनने के बाद निम्न चर्चा बिन्दुओं पर छोटे समूहों में प्रतिभागी चर्चा करें –

  - सीखना क्या है?
  - सीखने में सहायक तत्व कौन–कौन से है?
  - सीखने में बाधक तत्व कौन–कौन से हैं?
  - बच्चे विद्यालय पूर्व किस माहौल में और कैसे सीखतें हैं?

- प्राप्त विचारों को श्यामपट पर सूचीबद्ध करें–
- प्रतिभागियों से उपरोक्त चर्चा बिन्दुओं पर विस्तार से चर्चा करें और सीखने की प्रक्रिया को निम्न माडल से स्पष्ट करें–

सीखने का माडल

सीखने का अर्थ है – पुराने अनुभवों को नई–नई जानकारियों एवं समझ के द्वारा मजबूत एवं अर्थ पूर्ण बनाना। इसमें पुराने अनुभव को नकारा नहीं जाता वरन उन्हे नई–नई जानकारियों के माध्यम से अर्थपूर्ण बनाया जाता है। अतः पुराने अनुभव के आधार पर नई जानकारी हासिल करना एवं उनका विश्लेषण करना सीखने के प्रमुख स्रोत होते हैं। सीखनें की प्रक्रिया को अंतिम तभी माना जाता है जब बच्चा सीखी गई विषय–वस्तु का प्रयोग दक्षता के साथ करने में सक्षम हो जाता है, और इसी को पक्की सीख भी कहतें हैं।

आमतौर पर बच्चों के सीखने की प्रक्रिया में मष्तिष्क एवं विषय (पुस्तक) के बीच की अंतः क्रिया को ही मान्यता दी जाती है यह मान लिया जाता है कि बच्चे ने सीख लिया है। यह सीख कच्ची एवं बहुत दिनों तक ठहरने वाली नहीं होती है। यदि सीखने की प्रक्रिया में मष्तिष्क एवं विषय वस्तु के साथ अनुभव को भी जोड़ा जाता है तो सीख पक्की एवं जीवन में बार–बार प्रयोग करने वाली सीख बन जाती है। बच्चे विद्यालय पूर्व खुद अनुभव करके ही सीखा करते है। सीखने के चरणों को हम निम्न माडल से समझ सकतें हैः–

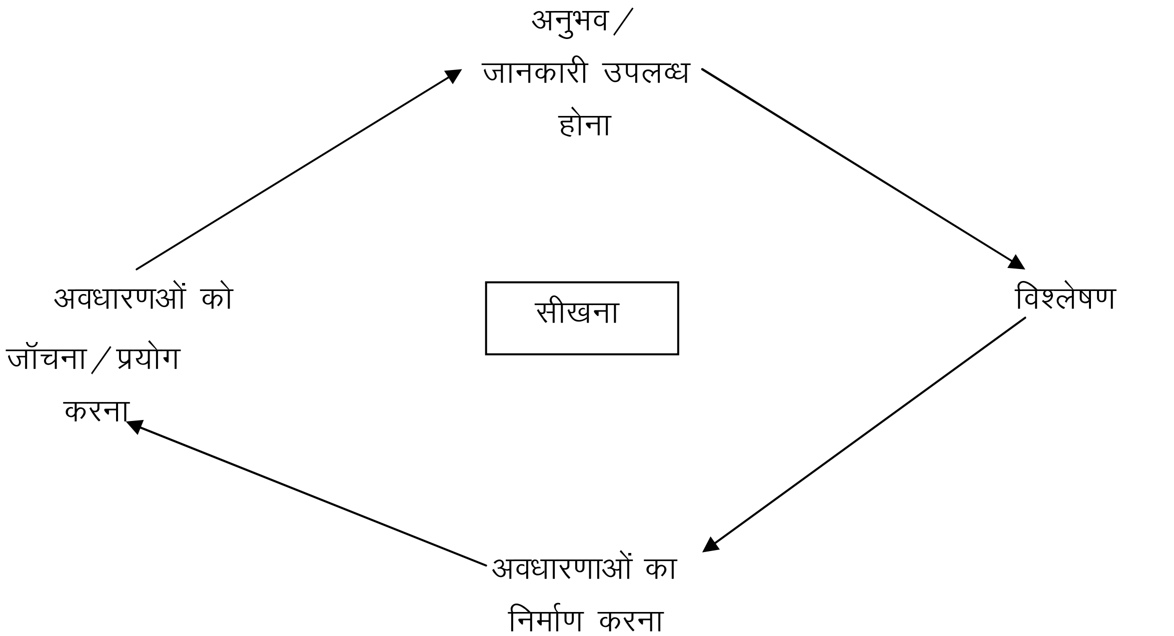

सीखने की प्रक्रिया में ''अनुभव करना या कराना'' अत्यन्त महत्व पूर्ण प्रक्रिया है इस प्रक्रिया को जितना प्रभावी बनाया जायेगा सीखना उतना ही प्रभावी होगा।

उपरोक्त माडल के आधार पर सीखने के चरण निम्न लिखित हैः–

मोटी समझ ——————→ धारणा ——————→ निष्कर्ष

अभ्यास अभ्यास

–कल्पना ज्यादा	–कल्पना कुछ कम	–कल्पना समाप्त
–अनुमान ज्यादा	–अनुमान की कमी	–अनुमान की जरूरत नहीं
–तथ्यात्मक जानकारी कम	–तथ्यात्मक जानकारी ज्यादा	–तथ्यात्मक जानकारी स्पष्ट
		–कार्य (अनुभव) –कारण संबंध की समझ

बच्चों के सीखने में माहौल/वातावरण का बहुत महत्व है । गॉव में सामान्यतः बच्चे परिवेश में स्थित वस्तुओं से ही खेलते है। चाहे वह मिट्‌टी हो, पत्थर हो, पशु–पक्षी, कीड़े–मकोड़े हो, पेड़–पौधे हों, लकड़ी, बॉस हो या अन्य कोई चीज। खेलने के इस क्रम में वे अनेक चीजों को सीखते हैं। वे घर–परिवार–समाज में स्थित विभिन्न्न लोगों से परिचित होते हैं, उनके काम–धंधों को भी देखतें हैं एवं समझतें हैं। बाजार, हाट, मेले, त्योहारों का आनन्द लेते हैं। हम कह सकतें हैं कि वे एक खुले माहौल में अनेक चीजें सीखतें हैं और स्वतंत्रता ही उनकी मस्ती का राज होता है। अगर हम ध्यान से देखें तो हम पायेंगें कि बच्चों के पास विद्यालय से पूर्व इस छोटी सी उम्र में ढेर सारे अनुभव और जानकारी होते है जैसे– चलने और दौड़ने, सुनने, रोने –गाने हँसने, चिल्लाने, खेलने कूदने, अभिनय करने के भय–क्रोध, रास्तों आदि को पहचाननें आदि। उनके अतिरिक्त उनके पास विषयों से सम्बन्धित भी अनेक जानकारिया होती हैं जैसे – चीजों को कुछ हद तक गिनना, शब्दों का भण्डार और उनका उच्चारण, अपने आस–पास मौजूद परिवेश – जानवरों, पक्षियों, फल–फूलों के सम्बन्ध में जानकारी आदि। इन अनुभवों के साथ जब बच्चें विद्यालय/केन्द्र में पहली बार प्रवेश करतें

हैं, उस वक्त उन्हे विद्यालय एक अति अनुशासित एवं भयावह जगह लगने लगता है। उनके पुराने अनुभव एवं विद्यालय की दिनचर्या/शिक्षण में उन्हे बहुत अन्तर नजर आता और यह उनके सीखने में बाधक लगने लगतें हैं अतः यह आवश्यक है कि विद्यालय/केन्द्र का वातावरण इस प्रकार का हो कि बच्चे को एक खुला माहौल मिले जहॉ भय का कोई स्थान न हो।

बच्चों के सीखने के सिद्वान्त

सिद्वान्त–१

बच्चें भयमुक्त एवं खुले वातावरण में खुद करके ज्यादा तेजी से सीखतें हैं ।

गतिविधि :–

- उपरोक्त सिद्वान्त को स्पष्ट करने हेतु प्रतिभागियों से कहें कि आप गॉव के उन बच्चों के बारे में सोचें, जो 6 से 9 वर्ष के आयु के हैं, और वे क्या काम करना जानतें हैं, उन्हे किस प्रकार की जानकारी होती है।
- उपरोक्त प्रश्न को उदाहरण से स्पष्ट करें– जैसे 6 साल के बच्चे को अनेक फलों एवं सब्जियों का नाम, पारिवारिक सम्बन्धों (जैसे माता, पिता) के बारे में जानता है, गाय बकरी चराना आता है आदि ।
- अब प्रतिभागियों को अपनी –अपनी कापी में उपरोक्त प्रश्न के सम्बन्ध में दो प्रकार की सूची बनाने को कहें पहला– 6 साल का बच्चा केन्द्र आने के पूर्व क्या जानता है? दूसरा– बच्चें ने उन जानकारियों को कैसे कहॉ सीखा?
- सूची निर्माण के उपरान्त इसकी प्रस्तुति करें और इसे चर्चा में जोड़ते हुए स्पष्ट करें कि सीखने के लिए किन–किन परिस्थितियों की आवश्यकता होती है।

सिद्धान्त

(II) बच्चे सरल से कठिन की ओर सीखतें हैं ।

(III) सीखने का माहौल तैयार किया जाए तो सीख तेजी से होती है।

गतिविधि

- श्यामपट पर एक वर्ग बनाकर प्रतिभागियों को उसे चार बराबर भागों में बॉटने के लिए आमन्त्रित करें ।
- विभाजित वर्ग के चारों भाग क्षेत्रफल एवं आकार दोनो में बराबर होने चाहिए ।
- पहले प्रतिभागी अपनी कापी पर प्रयास करें और तब श्यामपट पर आकर वर्ग विभाजित करें।
- प्रतिभागियों को वर्ग विभाजित करने के लिए प्रोत्साहित करें।
- किसी प्रतिभागी द्वारा श्यामपट पर विभाजित वर्ग के सही एवं गलत का निर्धारण अन्य प्रतिभागियों को ही करने को कहें। उनके माध्यम से ही करवायें।
- इस अभ्यास को बच्चों के सीखने के उपरोक्त दोनों सिद्वान्त से जोड़े और इस पर चर्चा करें।

सिद्वान्त

(IV) सीखने के शुरूवाती दौर में अक्षर, शब्द, अंक अथवा संख्या बच्चों के लिए मात्र आकृति होती है जिसे वे मूर्त वस्तु से जोड़कर देखतें हैं।

गतिविधि

- श्यामपट पर निम्नलिखित आकृति बना दें।

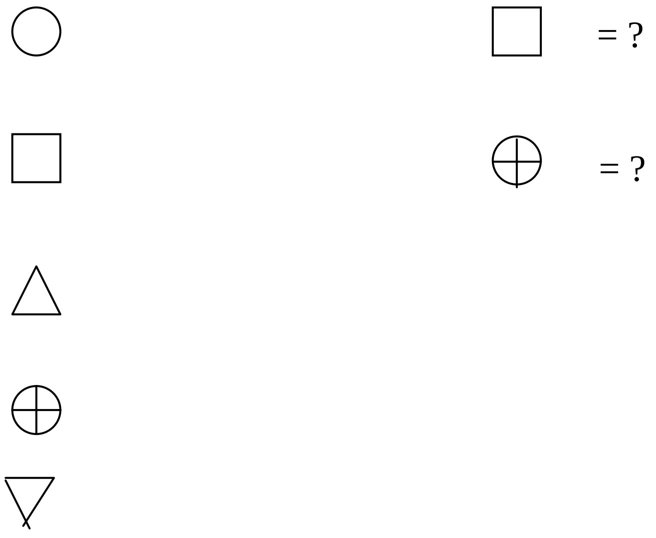

- प्रतिभागियों से पूंछें कि बायें ओर की आकृतियों के आधार पर बतायें कि दाहिनी ओर की आकृति क्या है ?
- प्रतिभागियों के प्रयास करने के बाद बतायें कि इसे हम निम्नलिखित आधार पर 'ख' एवं 'घ' कहते हैं।

○ = क, □ = ख, △ = ग, ⊕ = घ, ▽ = ड.

- चूँकि 'ख' एवं 'घ' की आकृति हमारे दिमाग मे विद्यमान हैं । अतः हम इन आकृतियों (□ ⊕) को 'ख' एवं 'घ' के रूप में नहीं पहचान पा रहे थे। ठीक इसी प्रकार बच्चे जब प्रथमबार 'क' 'ख' अथवा 3, 4.................... आदि को देखते हैं तो एक आकृति के रूप में देखते हैं न कि अक्षर 'क' एवं अंक 3, 4, के रूप में और उस आकृति को अपने अनुभव के मूर्त वस्तुओं से जोड़ते हैं।

सिद्वान्त

(V) प्रत्येक बच्चे के सीखने की गति भिन्न होती है ।

गतिविधि

- सभी प्रतिभागियों को एक–एक पुस्तक (हिन्दी) अथवा हिन्दी का अखबार उपलब्ध करायें। (यदि एक ही विषय–वस्तु लिखी सामग्री उपलब्ध हो तो ज्यादा बेहतर होगा।)
- प्रतिभागियों से कहें कि आपको उपलब्ध कराये गये पुस्तक या अखबार एक पृष्ठ नकल करके लिखना है। इसके लिए अपके पास 10 मिनट का समय है ।
- सभी प्रतिभागियों को कागज पर अपना नाम भी लिखने को कहें ।
- 10 मिनट के उपरान्त सभी से कागज लें ले।
- अब उनमे से कुछ प्रतिभागियों के कागज को लेकर चर्चा करें कि समय एक ही होने के बावजूद 10 मिनट में किसी ने आधा पृष्ट लिखा किसी ने पूरा लिखा, किसी ने एक चौथाई लिखा आदि।
- उपरोक्त अभ्यास को बच्चों के सीखने के गति से जोड़े और यह स्पष्ट करें कि जिस प्रकार लगभग एक ही उम्र (6–9) के बच्चे की वृद्वि (लम्बाई, मोटापा आदि) असमान

होती है ठीक उसी प्रकार प्रत्येक बच्चे की सीखने की गति भी अलग–अलग होती है कोई बच्चा तेजी से सीखता है तो कोई धीमी गति से अतः हमें यह अपेक्षा नहीं करनी चाहिए कि सभी बच्चे एक साथ एक ही स्तर पर सीखें।

बाल केन्द्रित शिक्षा

गतिविधि :–

प्रतिभागियों को बड़े घेरे में रखकर प्रशिक्षक उनके बीच ''इकाई, दहाई, सैकड़ा, हजार,'' कहते हुए घूमेगा। अचानक किसी प्रतिभागी के सामने रूक कर कहेगा'' 'हजार' तो उस प्रतिभागी को तुरन्त यह स्थानीय मान वाली संख्या बोलनी होगी । जो प्रतिभागी तुरन्त यह संख्या नहीं बोल पायेगा उसे अब खेल संचालन करना होगा और प्रशिक्षक उसके स्थान पर खड़ा होगा । इस प्रकार खेल जारी रहेगा। (नोटः– यह गतिविधि स्थानीय मान सीखने के क्रम में बच्चों के बीच कराई जा सकती है)

उपरोक्त गतिविधि पर चर्चा करते हुए प्रतिभागियों को बाल केन्द्रित शिक्षा से सम्बन्धित निम्न बातें बतायें :–

बाल केन्द्रित शिक्षा ऐसी शिक्षा व्यवस्था है, जो बच्चों को केन्द्र बिन्दु मान कर दी जाती है। बच्चों की रूचियों व उनकी आवश्यक्ताओं को ध्यान में रखकर दी जाने वाली शिक्षा को हम बाल शिक्षा केन्द्रित शिक्षा कह सकतें हैं । बाल केन्द्रित शिक्षा के अन्तगर्त यह माना जाता है। कि हर बच्चे में ज्ञान प्राप्त करने की असीमित क्षमता होती है । प्रत्येक बच्चा अपने आस–पास से काफी ज्ञान/जानकारी एवं अनुभव लिए हुए केन्द्र/विद्यालय पहुॅचता है और उसका यह पूर्व ज्ञान ही उसके सीखने की बुनियाद बनाता है ।

बाल केन्द्रित शिक्षा की विशेषताएॅ

(I) बच्चे शैक्षिक आयोजन के मुख्य केन्द्र बिन्दु ।

(II) पढ़ाने की प्रक्रिया से हटकर सिखाने की प्रक्रिया पर बल ।

(III) शिक्षक की भूमिका सहायक की। सुगमकर्ता की।

(IV) स्वयं सीखने की दक्षता का विकास।

(V) सर्वांगीण विकास पर बल ।

(VI) करके सीखने पर बल ।

रोचक शिक्षण

रोचक शिक्षण क्या ? को समझाने के लिए निम्नलिखित गतिविधि करें –

गतिविधि

प्रशिक्षक प्रतिभागियों के बीच एक नाटक प्रस्तुत करे। नाटक के तीन पात्र होंगे– सूर्य, चन्द्रमा और पृथ्वी। नाटक की प्रस्तुती में प्रशिक्षक एक या दो प्रतिभागियों की मद्द ले सकता है। प्रशिक्षक तीनो पात्रों के सीने व पीठ पर सूर्य, चन्द्रमा और पृथ्वी के चित्र/शब्द वाले पोस्टर लगा दें । अब तीनों पात्र बड़े प्रतिभागियों के बीच सूर्य, चन्द्रमा और पृथ्वी की तरह घूमेंगे और क्रम से सूर्यगृहण व चन्द्र गृहण की स्थितियों में आयेगें। इनके बीच परस्पर सूर्यगृहण व चन्द्रगृहण की स्थितियों और प्रभाव सम्बन्धित रोचक संवाद होंगे। इन्ही संवादों के द्वारा प्रतिभागियों को सूर्यगृहण व चन्द्रगृहण की स्थितियों से परिचय कराया जायेगा।

- प्रतिभागियों से चर्चा करें कि उन्हे, प्रदर्शित नाटक में क्या अच्छा लगा और क्यों ?
- नाटक से किस सम्बन्ध में जानकारी प्राप्त होती है ।
- इसके उपरान्त रोचक शिक्षण विधि से सम्बन्धित निम्नलिखित बातों से प्रतिभागियों को अवगत करायें।

रोचक शिक्षण विधि का तात्पर्य शिक्षण प्रक्रिया को इस ढ़ंग से रोचक बनाना है कि इसमें सीखे जाने वाली दक्षतायें स्पष्ट रूप से विद्यमान हों साथ ही प्रक्रिया में बच्चे आनन्द महसूस करें । इस दृष्टि से यह स्पष्ट है कि कोई मॉ खेल या गतिविधि रोचक शिक्षण नहीं है जब तक की उस खेल या गतिविधि में सीखे जाने वाली दक्षतायें पूर्व निर्धारित न हों। रोचक शिक्षण में निम्नलिखित विधियों को अपनाया जा सकता है – खेल, अभिनय, अनुकरण, भ्रमण प्रदर्शन, गीत, कविता, कहानी आदि। इसी प्रकार की रोचक शिक्षण की विधियों की सूची प्रतिभागियों को बनाने को कहें।

थीम आधारित शिक्षण

आनन्द सहित अर्थपूर्ण शिक्षा के लिए थीम (विषय–वस्तु) आधारित शिक्षण एक प्रभावी तरीका है। चूकिँ इसमें समेकित– शिक्षण किया जाता है । अतः बहुवर्गीय एवं बहुस्तरीय शिक्षण के लिए उपयुक्त है । इसमे बच्चों के आस–पास के परिवेश से ही विषय को चुनकर उसके चारों तरफ विभिन्न गतिविधियां निर्धारित की जाती हैं । इन गतिविधियों से भाषा, गणित एवं पर्यावरण की दक्षताओं को एक साथ विभिन्न स्तर के बच्चों अथवा विभिन्न कक्षाओं के बच्चों में विकसित की जाती है । गीत, नाटक, कहानी , खेल आदि अन्य मनोरंजक गतिविधियों के कारण यह विधि बाल केन्द्रित एवं आनन्द दायक दोनों ही होती हैं।

इस विधि में बच्चों के आस–पास के उदाहरण स्वरूप निम्नलिखित थीम को आधार बनाया जा सकता हैं, परन्तु यह ध्यान रखा जाना चाहिए कि चुनी गई थीम को हम पाठ्यक्रम न बता दें और न ही उसे एक विषय मानकर पढ़ाना शुरू करदें, अपितु उन विषयों (थीम) को सिर्फ एक माध्यम/सहारा मानकर उसको केन्द्र मे रखते हुए दक्षताओं को निर्धारित करते हुए गतिविधियों का आयोजन किया जाना चाहिए।

सम्भावित थीम

•जंगल •जानवर •विद्यालय •घर–परिवार •पेड़ •मानव •शरीर •व्यौहार •सवारी • बाजार • मौसम

सम्भावित क्रियाकलाप

• गीत • कहानी • नाटक • खेल • भ्रमण •चित्रांकन • बातचीत • पहेली

गतिविधि

- ''जानवर'' थीम का चयन कर थीम आधारित शिक्षण का अभ्यास प्रतिभागियों से करायें।
- सर्व प्रथम सीखने की दक्षताओं का निर्धारण करें जैसे –
    - ❖ बच्चों के शब्द भण्डार को बढ़ाना
    - ❖ जानवरों के नाम जानना
    - ❖ साथियों के नाम जानना

❖ मौखिक आदेश–निर्देश को समझना

• **खेल**

शिक्षक एक बच्चे को चूहा बनायें दूसरे बच्चे को बिल्ली बनायें चूहा बने बच्चें को गोलाई में खड़े बच्चों के बीच से इधर–उधर भागने को कहें। बिल्ली बने बच्चे को चूहा बने बच्चे को छूने को कहें। यदि बिल्ली बना बच्चा चूहा बने बच्चे को छू देता है तो वह खेल से बाहर हो जायेगा । पुनः दूसरा बच्चा चूहा बनेगा और खेल जारी रहेगा ।

खेल के सम्बन्ध में बातचीत

- खेल में आगे–आगे कौन भाग रहा था ?
- सबसे पहले बिल्ली कौन बना था ?
- बिल्ली कैसे बोलती है ?
- आस–पास दिखने वाले, जंगली–पालतू जानवरों के बारे में चर्चा करें ।

सहायक सामग्री

- चूहे का चित्र/ मुखैाटा
- बिल्ली का चित्र/ मुखौटा

• इसी प्रकार प्रतिभागियों से थीम चयन कर समूहों में दक्षताओं को निर्धारित करते हुए शिक्षण गतिविधियों का निर्माण करवायें और इसका प्रदर्शन बड़े समूह में करवायें।

भाषा शिक्षण

भाषा का अर्थ

भाषा शिक्षण की आवश्यकता एवं उद्‌देश्य
भाषा के रूप
स्थानीय भाषा से मानक भाषा वक

–बोली और भाषा में अन्तर

भाषा सीखने में मद्‌दगार बिन्दु

विभिन्न ध्वनिया

चित्र/वस्तु

बच्चों के अनुभव

खेल

हमारी पाठ्‌य पुस्तकें

भाषा शिक्षण

भाषा का अर्थ

सोचिए भाषा के बगैर आप क्या–क्या कर सकतें हैं ।

आप बाजार जातें हैं। सब्जी वाले से आपको आलू और टमाटर लेने हैं। इसके लिए आप क्या करते हैं?

हम इसके लिए बोलकर अपनी बात कहतें हैं यदि आप इशारे से बात करें तो क्या लोग समझ पायेंगें? नहीं।

आपका भाई दूसरे शहर में रहता हैं। उसको अपनी मॉ की बीमारी की सूचना देनी है। आप क्या करेंगें ? पत्र लिखकर सूचना देंगें।

भाई पत्र पढ़कर पिता की बीमारी का समाचार जानता है ।

यदि भाई को पत्र पढ़ना नहीं आता है तो पत्र में लिखी बात वह किस प्रकार जानेगा?

वह किसी पढ़े–लिखे व्यक्ति से पत्र पढवायेगा और सुनकर पत्र में लिखी बात जानेगा।

हमने देखा कि बोलकर, पढ़कर, सुनकर अथवा लिखकर अपनी बात को दूसरों तक पहुँचाना तथा दूसरों की बात को समझना।

हम इशारों से भी अपनी बात दूसरों तक पहॅुचा सकतें हैं किन्तु इसका क्षेत्र बहुत ही सीमित है ।

भाषा विचारों के आदान– प्रदान का सबसे महत्व पूर्ण साधन है ।

भाषा समाज के विकास को प्रकट करती है ।

यह व्यक्ति के विकास की भी सूचक हैं ।

बालक सबसे पहले अपने परिवेश से सीखता हैं । सुनकर, बोलकर उसकी भाषा का का विकास होता हैं ।

भाषा शिक्षण की आवश्यकता एवं उद्देश्य

केन्द्र में आने वाले बच्चे के पास उसकी अपनी एक भाषा होती हैं जो स्थानीय बोली पर आधारित होती हैं लगभग 1000–1200 शब्दों का उसका अपना शब्द भण्डार होता हैं उसके अधिकांश शब्द अपने परिवेश तथा वातावरण के होते हैं।

वह सुनना और बोलना जानता हैं। किन्तु, सुनना और बोलना ही काफी नहीं है। सुनने के साथ आवश्यक है

– समझकर सुनना और सुनकर समझना बोलने के लिए जरूरी है

समझकर बोलना

इसके लिए बच्चे के चिन्तन तथा कल्पना को विकसित करना पड़ेगा।

सुनने और बोलने के साथ पढ़ने और लिखने की दक्षता का बच्चों में विकास करना है। तो आइए श्यामपट पर भाषा शिक्षण के उद्देश्यों की चर्चा करें। माध्यम से इन निष्कर्षों को निकलवा दें।

1. समझकर सुननें की क्षमता का विकास
2. समझकर बोलने की क्षमता का विकास
3. समझकर पढ़ने की क्षमता का विकास
4. समझकर लिखने की क्षमता का विकास
5. चिन्तन तथा कल्पना का विकास
6. रचनात्मकता का विकास
7. मानक भाषा के प्रयोग की दक्षता

आइये इनके लिए कुछ गतिविधि करें।

गतिविधि का नाम – अन्तहीन कहानी

समय – 30 मिनट/अधिक भी हो सकता है

दक्षताएं – कल्पना शक्ति/तर्क शक्ति का विकास/नये शब्दो का ज्ञान/रचनात्मक प्रवृत्ति

विधि– इसमें प्रशिक्षण एक वाक्य कह कर कहानी का प्रारम्भ करेगा। जैसे–

नदी के किनारे सोनपुर नामक एक छोटा सा गॉव था।

फिर इसी वाक्य के आगे सभी प्रतिभागी अपना–अपना वाक्य क्रम से जोड़ते जायेंगे। वाक्य इस प्रकार से जोड़ना है कि एक सार्थक कहानी बन जाये। वाक्यों को एक व्यक्ति श्यामपट पर लिखता रहेगा।

यह गतिविधि 10–12 वर्ष के बच्चों से भी कराई जा सकती है।

ऐसे ही अन्य गतिविधियां सुनने, बोलने की क्षमता के विकास के लिए करवायें अपनी क्षमता के विकास के लिए आप भी कुछ क्रियाएं करें जैसे– (1) कवि दरबार (2) वाद–विवाद

भाषा के रूप

भाषा को मोटे तरीको से दो रूपों में बॉटा जा सकता है – मौखिक भाषा तथा लिखित भाषा :–

मौखिक भाषा

दैनिक जीवन में अधिकतर भाषा के मौखिक रूप का प्रयोग किया जाना है।

हम बोलकर अपनी बात दूसरों तक पहुँचातें हैं। हमारे बोलने की सार्थकता दूसरों के सुनने से होती है।

सुनना और बोलना दोनों का घनिष्ट सम्बन्ध है। बच्चें की अधिकॉश भाषा का विकास सुनकर होता है सक्रिय बच्चों को आपस में अधिक से अधिक बातचीत और अपनी बात कहने के अधिक से अधिक अवसर दिए जाने चाहिए। बातचीत, भाषण वर्णन आदि भी मौखिक भाषा के रूप हैं। शुरूवात में बच्चों के साथ अधिकाधिक मौखिक अभ्यास कराये जाने चाहिए।

लिखित भाषा

लिखित भाषा मौखिक भाषा की अपेक्षा अधिक स्थायी है।

पुस्तकें, साहित्य, पत्र–पत्रिकायें भाषा के लिखित रूप हैं।

भाषा के लिखित रूप में पढ़ने और सुनने के अतिरिक्त लिखना और बोलना भी आता है।

भाषा के लिखित रूप में पढ़ना और लिखना सिखाने के लिए ही हमें अधिक क्रियाएं करनी हैं।

हमारे पास जो बच्चे आतें हैं वे सुनना और बोलना जानते हैं । पढ़ना और लिखना नहीं ।

बच्चों को भाषा सिखाने के लिए पाठ्य पुस्तके भाषा किरण और शिक्षक संदर्शिकायें हैं।

आपको क्रियाविधि द्वारा बच्चों को भाषा कौशल में दक्ष बनाना है।

खेल

क्या है तेरी पुड़िया में

खेलने की विधि :– शिक्षक/अनुदेशक कुछ पर्चियां तैयार करेंगें। पर्चियों पर कुछ शब्द और क्रियाएं लिखी जायेंगी जैसे –बन्दर की बोली बोलना, शेर की बोली बोलना, हंसना, डांटना, किसी कविता की चार पंक्तिया कहना, कहानी कहना, श्यामपट पर लिखना 'मेरा नाम जोकर'। भाई हो तो ऐसा। इसी प्रकार अन्य क्रियाएं लिखें सारी पर्चियां किसी बर्तन/तश्तरी में रख दी जायेगी।

अनुदेशक बोलेगा

गोल–गोल चक्कर, बूझो लाल बुझक्कड।

दादी मॉ की हंडिया में, क्या है तेरी पुड़िया में ।

गोल–गोल चक्कर, लगा–लगा घुमक्कड़।

करो वही तुम बढ़िया से, मिले तुम्हें जो पुड़िया से ।

गोल गोल चक्कर लगाते हुए बच्चों में से एक बच्चा आकर पुड़िया उठायेगा और पर्ची में लिखी क्रिया करेगा। इससे बच्चें में पढ़ना, बोलना, लिखना और अभिनय करने की क्षमता बढ़ेगी।

इन कौशलों में ही बच्चों को दक्ष बनाना ही भाषा शिक्षण का प्रमुख उद्देश्य है।

♦ **एक उदाहरण** – इसके लिए एक कोई खेल करा सकते हैं जैसे ''क्या तेरी पुड़िया में''

स्थानीय भाषा से मानक भाषा तक

मानक भाषा पर विचार करें। आइये अब स्थानीय और आप लोग आपस में जिस भाषा का प्रयोग करते हैं वह पुस्तक की भाषा से अलग होती है ।

ज्यादातर हम लोग आपस में बोलचाल की स्थानीय भाषा का प्रयोग करते हैं ।

इसे बोली भी कहते हैं ।

कहते है चार कोस पर बदले बोली, आठ कोस पर पानी।

आपके पास आने वाला बच्चा भी घर में बोली जाने वाली स्थानीय भाषा का प्रयोग करता है । बोली ही उसके सीखने का आधार होती है ।

आत्मीयता स्थापित करने के लिए अनुदेशक भी बच्चों में उनकी ही बोली में बात करनी चाहिए।

इससे उनकी झिझक दूर होगी

धीरे–धीरे स्थानीय भाषा से उसे मानक भाषा की ओर लाना है ।

जैसे– बस्ती, गोण्डा आदि क्षेत्र के बच्चे से पूॅछे –

तोहार का नाम है – तुम्हारा क्या नाम है

कहाँ रहत है। – कहाँ रहते हो

तोहर बच्चा का करत है । तुम्हारे पिता जी क्या करतें हैं बच्चों से लोकगीत लोक कथायें सुनें और सुनायें।

यह उसको भाषा सीखने में मद्द करेगी। बड़ें समूह में चर्चा करें।

बोली भाषा में क्या अन्तर है ?

क्या बोली और स्थानीय भाषा में शिक्षा दी जा सकती है? अपने केन्द्र में पढ़ाते समय क्या आप स्थानीय बोली का प्रयोग करना चाहेगें कब और क्यों ?

समूह चर्चा से निकले निम्न तथ्यों को प्रतिभागियों को बतायें–

जनता बोली/स्थानीय भाषा के जरिये ही अपना सारा कार्य करती हैं।

लोकभाषा अधिक लचीली और गतिमान होती है ।

स्थानीय भाषा कम महत्व पूर्ण नहीं है ।

एक रूपता के लिए हमें बोली। स्थानीय भाषा से बच्चे को मानक भाषा तक लाना होता है।

भाषा सीखने की प्रक्रिया

बच्चे अपने घर और परिवेश में हो रही बातों को सुनते रहते हैं। शब्द की ध्वनि के साथ उनसे सम्बन्धित वस्तुओं और आकार को देखने और पहिचानने लगतें हैं तथा उनमें तादात्म्य स्थापित करतें है।

बच्चा मुड़ेर पर बैठे कौआ को देखता है । उसकी कॉव–कॉव की ध्वनि को सुनता है। घर का कोई सदस्य मां, पिता बड़ी–बहिन इस पक्षी को देखकर कहता है।

कौआ बैठा हैं।

बालक बार–बार कौआ की आवाज कांव–कांव सुनता है। उसे देखकर बहन द्वारा कहे गये शब्द कौआ को सुनना है।

धीरे–धीरे वह कौआ और कांव–कांव की ध्वनि से सम्बन्ध स्थापित कर लेता है। कौवा को देखकर और कांव–कांव सुनकर वह बोलता है 'कौआ'

इस प्रकार सुनकर समझकर बोलना प्रारम्भ हो जाता है।

विभिन्न ध्वनियां के अन्दर ही हम शब्द तथा वाक्य बोलना प्रारम्भ करते हैं तथा बच्चों की भाषा का विकास होता है।

छोटे–छोटे गीतों कविताओं के माध्यम से हम बच्चों को ध्वनि और शब्दों का ज्ञान करा सकते हैं आइए खेलें।

1	**प्रशिक्षक**	**प्रतिभागी**
	कोयल	कूःकूः
	चूहा	चूं चूं
	घण्टा	टन टन
	सिक्का	ठन ठन
	मच्छर	भन भन
	चूड़ी	खन खन
	बछड़ा	बां बां
	मुन्ना	मां मां
2	डमरू	डम डम
	ढोलक	ढम ढम
	पायल	छम छम
	पानी	झम झम

बन्दर	खों खें
कुत्ता	भों भों
चिड़िया	चें चें
बकरी	में में

चित्र तथा वस्तु – बच्चा धीरे–धीरे केवल वस्तु को देखकर ही नहीं वरन उनके चित्रों को देखकर भी वस्तु को पहचाननें तथा बताने लगता है।

वह कौआ देखकर ही नहीं उसका चित्र देखकर भी पहचान लेता है और बता देता है कि यह कौआ है। यहाँ आकर भाषा के विकास में तेजी आ जाती है।

केन्द्र में आने वाला बच्चा वस्तु के चित्र को पहचान लेता है।

आप चित्रों के माध्यम से बच्चों की भाषा का विकास करें ।

भाषा किरण भाग 1 में पृष्ठ 6 पर कुछ वस्तुओं के चित्र दिये गये हैं –

जैसे –बाग–पेड़, तोता।

मधुमक्खी।

बैलगाड़ी।

चाक।

घोंसला।

चारपाई पर बैठा आदमी।

छाता।

फल।

गतिविधि :– खरगोश आदि – इनकी पहचान करायें।

(1) पुरानी पत्रिकाएं, कैलेण्डर से रंगीन चित्र काटें तथा बच्चों से उनके बारे में पूँछे।

(2) कागज पर बच्चों से इन चित्रों को चिपकायें बच्चों से परिवेश में पाये जाने वाले पशु पक्षियों के चित्रों को इकठ्ठा करवायें।

बच्चों के अनुभव –

जीवन के वास्तविक अनुभव से जुड़कर सीखना सरल और रोचक होता है।

बच्चे उन चीजों को सरलता से सीखतें हैं जो उसके घर और परिवेश से जुड़े होते हैं।

वार्ता करें – बच्चो से घर में पाये जाने वाले पालतू पशु/पक्षियों के बारे में बताने को कहें।

उसे माँ क्यों अच्छी लगती है ? पूँछे

खाने में उसे क्या अच्छा लगता है बताने को कहें।

घर में होने वाले तीज त्यौहार होली, दीपावली ईद के बारे में बात करें।

हाव–भाव से गीत/कहानी सुने/सुनायें

सर सर सर सर उड़ी पतंग

फर फर फर फर उड़ी पतंग

इसको काटा उसको काटा

खूब लगाया सैर सपाटा

झट लड़ने में जुड़ी पतंग

सर सर सर सर उड़ी पतंग

<u>खेल–</u>

खेल अत्यन्त रोचक एवं आनन्द दायी क्रिया है यह बच्चे का पूरा ध्यान केन्द्रित करती है।

बच्चे शक्ति और उर्जा का भण्डार होते हैं ।

वे खेल–खेल में आसानी से पढ़ना लिखना सीख लेते हैं।

<u>(१) गतिविधि</u>

बच्चे को 'क' और 'ख' सिखाने के लिए फ्लैश कार्ड लें जिनमें चित्र के साथ क तथा ख से बने शब्द लिखें हैं।

क–   कमल का चित्र   कमल
क (यहाॅ क वर्ण माला)

कबूतर का चित्र	कबूतर क
ककड़ी का चित्र	ककड़ी क
कटहल का चित्र	कटहल क

ख–

खरगोश का चित्र	खरगोश ख
खरबूजे का चित्र	खरबूजा ख
खटमल का चित्र	खटमल ख

बच्चों से पाकेट बोर्ड में 'क' से बने शब्द के कोर्ड लगाने को कहें साथ ही 'क' वर्ण की पहचान करायें। इसी प्रकार अन्य वर्णों को सिखायें ।

(2) वर्ण सिखाने के लिए अन्य गतिविधि प्रयोग कर सकतें है।

	नाम	शहर (जहॉ रहता है)	खाने की वस्तु	खेल
क	कमलेश	कन्नौज	ककड़ी	कबडडी / कोड़ा जमाल शाही
ख	खूबचन्द्र	ख्याली गंज	खरबूजा	खो खो

शिक्षक बोलें

क्या है नाम?

शहर है कौन?

क्या तुम खाते ?

खेल है कौन ?

ना बतलाया।

बने फिसड्डी।

हा! हा! हा! हा! हा! हा!

इसी प्रकार खेल द्वारा शब्द बनाना आदि सिखाया जा सकता है ।

पाठ्य पुस्तकें

आपके केन्द्र पर आने वाले सभी बच्चों के पास 'भाषा किरण' है।

यह भाषा की पाठ्य पुस्तक है ।

आपको इसी के आधार पर बच्चों को भाषा सिखाना है।

भाषा किरण के प्रत्येक पाठ के साथ कुछ गतिविधियां दी गई है।

पाठ कें नीचे आपके लिए कुछ निर्देश भी दिये गये हें आप उन्हे पढ़े और उसके आधार पर बच्चों से क्रियायें करवायें जैसे भाषा किरण भाग एक के पृष्ठ 28 पर पाठ के नीचे आप के लिए निर्देश हैं

'' पतंगों के रंगों की पहचान करायें और कविता हाव–भाव के साथ पाठ करायें ''

पाठ के अन्त में कुछ अभ्यास दिये गये हैं आप बच्चो से उन्हे करवायें। इससे बच्चों के कौशलों का मूल्यांकन होगा ।

आपकी सहायता के लिए प्रत्येक पाठ्य पुस्तक की शिक्षक संदर्शिकायें हैं।

आप उनका भली भॉति अध्ययन करें । इससे आपको बच्चों को सिखाने में मद्द मिलेगी ।

भाषा शिक्षण में इन बिन्दुओं का ध्यान रखें।

इससे आपके शिक्षण में निखार आयेगा।

विषय–गणित

गणित सीखने –सिखाने की क्रिया कुछ लोगों को कठिन लगती है । हो सकता हैकि आपको भी ऐसा ही लगता हो । लेकिन ऐसा है नहीं। गणित सरल और रोचक विषय है।–

आओ उसे समझाने की कोशिश करें ।

चर्चा के बिन्दु

1. गणित खेल है अंको और आकृतियों का ।
2. खेत–खलिहान और घर–बाजार गणित ही गणित ।
3. गणित आई धोखा–धड़ी भागी।

बिन्दु–1

(क) नीचे दिये गये अंको के खेल को श्यामपट पर लिखें। प्रतिभागियों से इसे अपनी–अपनी कापी पर उतार कर उपयुक्त चिन्ह [+ - x ÷] चुनकर खाली जगहें चिन्ह भरने को कहें।

11 □ 6 □ 5 = 10

2 □ 9 □ 3 = 8

3 □ 6 □ 2 = 9

12 □ 2 □ 4 = 2

अंको के इस खेल में पूरा करने वालों में से प्रथम चार को चुन कर चार समूह बना दें। प्रत्येक समूह से अंको के कुछ और खेल बनाकर देने को कहें । उनके द्वारा बनायें गए खेलों पर चर्चा कराऐं।

(ख) श्यामपट पर नौ बिन्दु नीचे दिए गए क्रम में बना दें। प्रतिभागियों को इन्हें अपनी कापी पर इसी क्रम में बनाने को कहें। उन्हें बतायें कि चार रेखायें खींच कर इन सभी बिन्दुओं को मिलाना है। रेखाएं एक दूसरे को काट सकती हैं लेकिन पहले की खींची गयी रेखा पर नई रेखा दूसरी बार नहीं जा सकती है।

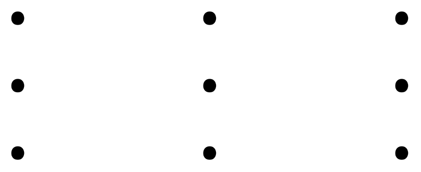

जो समूह न कर सके उसे आप बता दें। प्रत्येक समूह से इससे मिलते जुलते अंक/आकृति पर आधारित अन्य खेल बना कर देने को कहें । उन पर चर्चा कराऐं। चर्चा में चारों समूहों को सम्मिलित करें।

चर्चा बिन्दु–2

प्रतिभागियों से कहें कि वे अपने अनुभव के आधार पर अपने आस–पास खेत–खलिहान, घर–बाजार आदि में ऐसी जिन–जिन चीजों को देखते हों जिनसे गणितीय संक्रियााएं जुड़ी हों उनकी सूची बनाएं। प्रत्येक समूह उनपर पहले आपस में चर्चा करें कि उन्हे सभी के बीच प्रस्तुत करें । बनायी गई सूचियां कुछ इस प्रकार की हो सकती हैं –

खेत–खलिहान– पुआल की अथवा डंठलों /झांखर की गड्डियां (अनाज, दलहन, तिलहन आदि)

अनाज, दलहन, तिलहन आदि की तौल, इनका मूल्य, खरीद–बिक्री आदि।

कम या अधिक उपज गतवर्ष की तुलना में । खाद–पानी में कमी लागत, फायदा, नुकसान आदि ।

घर– उपयोग में आने वाले सामानों पर संख्या–रसोई घर में, सोने–बैठने के फर्नीचर आदि की संख्या । खर्च का व्यौरा विभिन्न मदो में ।

बाजार– आटा, दाल, सब्जी, मसाले आदि तौल कर बिकने वाली चीजें । बैंक–डाकघरों में रूपये पैसे का लेन–देन । दूध–तेल आदि की माप लीटर– मिली लीटर में। कपड़े आदि की नाप मीटर, मिली मीटर में ।

चर्चा के क्रम में इस तथ्य को उभारने की प्रयत्न करें कि कदम–कदम पर हमे गणित की जरूरत पड़ती है । इसे पढ़े–लिखे तथा अनपढ़ दोनो ही अपने–अपने तरीके से हल करते हैं ।

चर्चा बिन्दु–3

प्रत्येक समूह से कम से कम दो ऐसी घटनायें सुनाने को कहें जिनसे यह बात सामने उभर कर आये कि गणित की जानकारी के अभाव में किसी व्यक्ति विशेष को जीवन में अत्यन्त परेशानी उठानी पड़ी हो ।

प्रत्येक समूह द्वारा बताये गये अनुभवों को आधार बनाते हुए इस तथ्य को समझाने की कोशिश करें कि गणित का व्यावहारिक ज्ञान प्राप्त कर लेने से उसे रूपये पैसे के मामले में किसी के द्वारा ठगना आसान नहीं रहता।

इन क्रिया कलापो एवं चर्चा से स्पष्ट हो जाता है कि गणित से हमारा बहुत निकट का सम्बन्ध है । उठने–बैठने, चलने–फिरने, खाने–पीने से लेकर समस्त दैनिक क्रियाओं से गणित जुड़ी हुई है। गणित कठिन नहीं है । हमारी गलत सोच एवं तथ्यों के आदान–प्रदान में गलत तरीकों का इस्तेमाल इसे समझने वाले के लिए कठिन बना देता है।

हम वस्तुओं को गिनते हैं । उन्हें निर्धारित संख्या में रखतें हैं। वस्तुओं की लम्बाई व मात्रा की गणना करते हैं । धारिता तथा मुद्रा सम्बंधी क्रिया–कलाप करते हैं। हमारे एवं आपके विचाार एवं समस्याएं संख्यात्मक होती है। ऐसे विचारों एवं क्रिया कलापों की पृष्ठभूमि में प्राथमिक स्तर के लिए गणित सीखने–सिखाने के निम्नलिखित उद्देश्य निर्धारित किये जा सकेंतहैं :

- शीघ्रता एवं शुद्धता से वस्तुओं की गणना करना ।
- गणित के चिन्हों का प्रयोग करते हुए संख्या से जुड़ी बातें कहना और लिखना तथा रेखाचित्रों से प्रदर्शित करना ।
- दैनिक जीवन की सरल समस्याओं को गणित के नियमों और कौशलों के सहारे हल करना।
- भौतिक राशियों का अनुमान लगाना एवं आकलन करना।
- तार्किक ढ़ंग से सोचने की योग्यता प्राप्त करना तथा उनके अनुसार क्रिया करना ।
- संख्याओं, आकृतियों , वस्तुओं और घटनाओं के क्रम तथा पैटर्न को पहचानना ।
- परिवेशीय वस्तुओं का ज्यामितीय आकृतियों से सम्बन्ध स्थापितकरना।
- संख्याओं और गणितीय क्रियाओं के गुण एवं आपसी सम्बन्ध पहचानना।
- गणितीय क्रियाओं एवं रेखाचित्रों में दिये गये कथनों में लिखना।

अधिगम बिन्दु–

गणित सीखने में ठोस मूर्त वस्तुओं से बहुत सहायता मिलती है।

चर्चा के बिन्दु–

(i) गणित एक अमूर्त विषय है । यह अमूर्तपन बच्चों के गणित सीखने में बाधक होता है।

(ii) ठोस (मूर्त) वस्तुओं से गणित की अमूर्त अवधारणा सरल हो जाती है ।

(iii) गणित सीखने–सिखाने में भाषा प्रयोग के साथ–साथ चित्रों व वस्तुओं की भूमिका अहम होती है।

उपरोक्त बिन्दुओं पर विचार करते हुए चर्चा के क्रम में निम्नांकित गतिविधियां कराई जा सकती हैं।

गतिविधि : वस्तु व चित्रों का अंको के साथ सम्बन्ध स्थापित करना

सामग्री जैसे –गोलियां, मोती, इमली के बीज, निबौरी आदि।

	1	एक
	2	दो
	3	तीन
	4	चार
	5	पांच
	6	छः
	7	सात
	8	आठ
	9	नौ
नोटः दिये गये गोलों और अंको में सम्बन्ध स्थापित करें तथा इसी क्रम में उन पर उंगली रखवाकर समझ विकसित करें ।	संख्या अंको में	संख्या शब्दों में

पाठ्य पुस्तक	भाषा किरण भाग–1 के पृष्ठ 32,33,34 तथा 42 पर दी गई विषय वस्तु तथा अभ्यास के द्वारो 1 से 9 तक के अंकों की समझ पक्की करें।

अ0 संदर्शिका	मूर्त वस्तुओं की मद्द से अंको की समझ पक्की करने के लिए भाषा किरण भाग–1 की शिक्षक संदर्शिका के पृष्ठ 49 और 57 पर दी गई विधियों की मद्द ली जा सकती हैं।

टिप्पणी – प्रशिक्षण के अन्तर्गत आप प्रतिभागियों को यह स्पष्ट कर दें कि इन गतिविधियों को उन्हें केन्द्र के बच्चों से कराना है। इनके अतिरिक्त भी वे स्थानीय विशेषताओं पर आधारित अन्य गतिविधियां भी आयोजित कर सकते हैं।

गतिविधिः– वर्गीकरण करना

ऊपर अंकित गिनकों के अलावा कुछ अन्य सामग्री जैसे पेड़–पौधों के पत्ते– पत्तियां, चूड़ियों के टुकड़े, मटर, मकई, चने आदि के दाने आदि भी ले सकते हैं।

उपलब्ध सामग्री में से एक तरह की चीजें चुन–चुन कर अलग–अलग ढ़ेरियां बनवाएं।

गतिविधिः– समूहीकरण करना

कुछ लोग चीजों की गणना समूहों के साथ में भी करते हैं। इस लिए समूहीकरण करने के दक्षता विकसित करने का भी विशेष महत्व है।

उपलब्ध सामग्री से आप 2–2, 3–3, 5–5 के समूह बारी–बारी से बनवाएं । प्रत्येक समूह में दी गई चीजों तथा समूहों की संख्या गिनवाएं।

वर्गीकरण और समूहीकरण की गतिविधियों में वस्तुओं के गिनने का अभ्यास कराते हुए प्रतिभागियों का ध्यान इस ओर आकर्षित करें कि जब किसी अंक का उच्चारण करते है तो इसे

संख्या कहते हैं । इसी संख्या को जब लिपि के रूप में प्रदर्शित करते है तो उसे संख्यांक कहते हैं।

अधिगम बिन्दुः शून्य की अवधारण

गतिविधिः शून्य की अवधारण स्पष्ट करने के लिए नीचे दी गयी गतिविधि कराई जा सकती है।

दो तीन प्रतिभागियों को अपने पास बुलाएं । किसी के हाथ में पेन्सिल तो किसी के हाथ में किताब , कलम आदि दें । उनसे पूछे कि उनके हाथ में क्या–क्या है। अव उनसे अपनी–अपनी चीजें मेज पर रखने को कहें। पुनः पूछें कि उनके हाथ में अब क्या है। सभी कहेंगे कि अब उनके हाथ में कुछ नहीं है।

आप स्पष्ट करें कि कुछ नहीं को (0) से दिखाते हैं।

पाठ पुस्तक	शून्य की अवधारणा पक्की करने के लिए आप भाषा किरण भाग–1 में पृष्ठ 51 पर दिये गये पाठ उड़े गुब्बारे की मद्द ले सकते हैं।

संदर्शिका	भाषा किरण भाग–1 अध्यापक संदर्शिका के पृष्ट 68–69 पर दी गई गतिविधियों का सहारा लेकर आप शून्य की अवधारण को समझने में सहायता कर सकते हैं।

अधिगम बिन्दु : गणित की मौलिक संक्रियाएं जोड़, घटाव, गुणा और भाग हैं।

विचार बिन्दु : जोड़ने को चीजों को मिलाने के रूप में देखना।

गतिविधि : चीजों को मिलाकर एक रूप में देखने के लिए आप नीचे दी गई प्रतिभागी नीचे दिये गये उदाहरण के समान अपनी–अपनी उंगली रखें

☏ ☏	और	☏	मिलकर हुए	☏☏☏
2	और	1	मिलकर हुए	3
2	जोड़	1	बराबर	3
2	+	1	=	3

इसी आकार पर जोड़ (+) तथा बराबर (=) के चिह्नों से परिचित कराएं

पा ठ् य पु स्त क	संख्याओं के जोड़ने की समझ पक्की करने के लिए आप भाषा किरण भाग–1 के पृष्ठ सं0 43, 44 और 45 का सहयोग ले सकते हैं।

हमें कई कार्यों में नाप–तोल की जरूरत पड़ती है

- लम्बाई की नाप मीटर और सेंटी मीटर में की जाती है।
- तौलने के लिए किलोग्राम और ग्राम वाले बांट होते हैं।
- दूध, तेल, पेट्रोल आदि की नाप मीटर और मिली लीटर में होती है।

चर्चा में बिन्दु

– लम्बाई नापने में अंगुल, बालिश्त, हाथ, कदम, डंडे आदि का प्रयोग अमानक इकाइंयों के रूप में।

अनुदेशक बच्चों से प्रश्न करे।

- फीता, पैमाना आदि न होने पर लोग कपड़े या रस्सी की लम्बाई कैसे नापते हैं?
- गिल्ली डंडे के खेल में आप लोग गिल्ली की दूरी कैसे नापते हो?
- क्या सभी के हाथ या बालिश्त की लम्बाई एक बराबर होती है?
- क्या अलग अलग लोगों द्वारा अमानक इकाइयों से नापी गयी लम्बाई एक समान होगी?
- अमानक इकाइयों से नाप लेने से आपस में किस किस तरह के झंझट पैदा होसकते है?

- इसी क्रम में आप बच्चों में मानक इकाई मीटर की समझ विकसित करें। उन्हें बताएं कि सेंटी मीटर लम्बाई नापने की छोटी इकाई है। 100 सेंटीमीटर मिलकर 1 मीटर के बराबर होते है।

क्रिया कलाप

इस बात की समझ पुष्ट करने के लिए कि अमानत इकाइयां एक समान नहीं होती बच्चों से कुछ क्रिया–कलाप कराएं।

क्रियाकलाप–1 – सभी बच्चों से कमरे या बरामदे (केन्द्र का) फर्श अपने अपने कदमों से नापकर अपनी कापी में लिखने को कहें।

प्रत्येक बच्चे से उसके द्वारा लिखी नाप को पूछ कर श्याम पट्ट पर लिखे। बच्चे देखेगें कि कुछ नाप मिलती जुलती अवश्य है किन्तु ऐ समान नहीं हैं।

क्रियाकलाप–2 – कुछ बच्चों से मेज की लम्बाई एक पैमाने या फीते से अलग–अलग नपवायें। उनकी नाप को श्याम पट्ट पर लिखे। यदि बच्चे पैमाने पर दिये गये चिन्हों को न पढ़ सके तो आप उनकी मद्द करे।

श्यामपट्ट पर लिखी नापों की मद्द से बच्चों में यह समझ विकसित करें कि मानक इकाई सें गयी सभी बच्चों की नाप एक समान है।

क्रियाकलाप–3 – बाल गणित भाग 2 के पाठ नाप–जोख लम्बाई में पृष्ठ 44 से 48 तक दिये गये क्रिया कलापों को करा कर अमानक और मानक इकाई के बारे में समझ स्पष्ट करें।

विचार बिंदु

हल्की–भारी वस्तुओं की सामान्य समझ बच्चों में होती है। जब हल्के–भारी में अन्तर कम होता है तो अनुमान लगाना कठिन होता है। तराजू में तौलकर हल्के–भारी का ठीक–ठीक पता चलता है। तौलने के लिए मानक बाट किलो ग्राम होता है। किलो ग्राम से छोटे बाट ग्राम के होते है।

1 किलोग्राम से बड़ी तौल के लिए 2 किलोग्राम, 5 किलोग्राम, 90 किलोग्राम आदि के बांट होते हैं। 9 किलो ग्राम से छोटे बांट ग्राम के होते हैं।

किलोग्राम से छोटे बाट क्रमशः 500 ग्राम, 200 ग्राम, 100 ग्राम, 50 ग्राम आदि के होते हैं।

बच्चों से प्रश्न करें।

तुम्हें 5 किलोग्राम आलू खरीदने हैं। दुकानदार के पास 2 किलोग्राम से ऊपर का बाट नहीं है। वह 5 किलो ग्राम आलू तौल कर कैसे देगा?

1 किलो ग्राम में 1000 ग्राम होते हैं। 1 किलोग्राम दाल तौलने के लिए 500 ग्राम के बाट से उसे कितनी बार तौलना होगा?

750 ग्राम टमाटर तौलने के लिए सब्जी वाला कौन–कौन से तीन बाट काम में लायेगा?

क्रिया कलाप – बच्चों को चार समूहों में बांट दे। अब प्रत्येक समूह के बच्चों से सरखंडे, नरकुल या बांस की कमाची की मद्द से एक एक तराजू बनवाएं। पलड़ों आदि का चुनाव आपने आप सूझ–बूझ से करने दें। उन्हें मानक बांटों की सहायता से अपने अपने बांट भी तैयार करने को कहें।

अन्त में आप जांच करें कि किसकी तराजू अधिक सही तौल देती है। उस समूह को अपनी तराजू बनाने विधि बताने को कहें।

विचार बिंदु

कुछ बरतनों में अधिक दूध या पानी आ सकता है तो कुल में कम जिस र्बतन में अधिक पानी या दूध आता है उसकी धारिता अधिक होती है। जिस बर्तन में पानी कम आता है उसकी धारिता कम होती है

धारिता नापने की मानक इकाई लीटर है। लीटर से छोटी इकाइयां मिलि लीटर की होती हैं।

1 लीटर में 1000 मिली लीटर होते हैं।

इन लीटर और मिली लीटर से संबंधित विचारबिंदुओं को, विकसित करने के लिए बाल गणित भाग 2 के पाठ 'लोटा गिलास से नापें'।

पृष्ठ 59 और 60 पर दिये गये क्रिया कलाप कराएं।

विचार बिंदु

समय की ठीक–ठीक जानकारी हमें घड़ी से होती है।

घड़ी में क्या समय है इसका पता हमें छोटी–बड़ी सुइयों की स्थिति से चलता है।

प्रदर्शन प्रयोग

कहीं से एक मेज़, घड़ी या अलार्म घड़ी लाकर बच्चों को दिखाएं। यदि मेज़ घड़ी न मिल सके तो हाथ की काम में जा सकते हैं। घड़ी की सुइयों को धुमाकर दिखायें। उन्हें समझने में मद्द करे कि बड़ी सुई घड़ी में पूरा चक्कर लगाती है तो छोटी सुई केवल एक चिन्ह आगे बढ़ती है।

बड़ी सुई मिनट बताती है और छोटी सुई घंटे।बड़ी सुई घड़ी का (डायल पर) पूरा चक्कर 60 मिनट में लगाती है। इतनी देर में छोटी सुई एक चिन्ह बढ़ कर एक घंटा बताती है। एक घंटे में 60 मिनट होते हैं। छोटी सुई घड़ी (डायल) का पूरा चक्कर 12 घंटो में लगाती है।

घड़ी से छोटी–बड़ी सुई, डायल तथा छोटे बड़े चिन्हों की जानकारी देने के साथ–साथ श्यामपट्ट पर रेखाचित्र खींचकर उस सभी बिंदुओं को स्पष्ट करते जायें

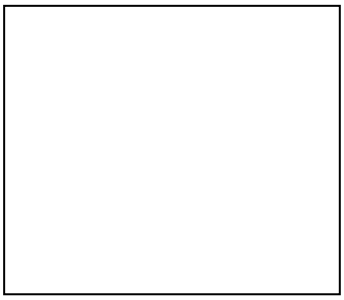

चित्र में छोटी सुई 3 पर है। इसलिए 3 घटे या 3 बजने का पता छोटी सुई से चलता है। बड़ी सुई 12 पर है इसलिए यह मिनट नहीं बता रही है।

बड़ी सुई चिन्ह 1 तक आने में 5 मिनट का समय लेगी और 2 तक आने में 10 मिनट का समय लेगी। इस प्रकार बड़ी सुई प्रम्येक एक बड़े चिह्न से दूसरे बड़े चिळन तक जाने में5 मिनट का समय लेती है।

बच्चों से टिक–टिक चले घड़ी वाले पाठ की मद्द से जो बाल गधित भाग2 के पृ्ष्ठ 65 से 68 तक में दिये गये है। घड़ी से समय देखने की क्षमता का विकास करें।

पृष्ठ 67 पर घड़ी का एक माडेल बनाने की विधि दी गई है। बच्चों से उसे बनवाकर घ्ड़ी में समय देखने का अभ्यास कराएं। बच्चों में छिपी सृजनात्मक प्रवृत्ति उभार कर उन्हें अन्य वस्तुओं से भी घड़ी का माडेल बनाने के लिए उत्साहित करें।

बाल गणित भाग 2 के वर्ष–महीने वाले पाठ से दिनों का क्रम सोमवार, मंगलवार........आदि की जाकारी दे सप्ताह, म्हीने और वर्ष की समझ विकसित करें। कौन सा महीना कितने दिन का होगा इसके लिए पृष्ठ 70 पर दी गई कविता याद करा दें।

अधिगम बिंदु

लेन–देन में काम आने वाले नोट व सिक्के कई मूल्यों के होते हैं।

गतिविधि

नोट और सिक्कों की पहचान आप प्रतिभागियों को स्पष्ट कर दें कि बच्चों को नोट और सिक्को के बारे में जानकारी देने के लिए कई तरीके काम में लाये जा सकते है। एक तरीका यह भी हो सकता है जिसे उनके सामने रखा जा रहा है, इसमें परिचर्चा का सहारा लिया गया है जो बच्चों के अनुभवों पर आधारित है

कई बच्चे अपनी जरूरत कई चीजें स्वयं खरीदते हैं। इसी क्रम तें वे कुछ नोट और सिक्कों को पहचानने लगते है। नोट और सिक्कों के बारे में उनकी समझ कितनी है इसे परिचर्चा द्वारा उभारते हुए आगे बढ़ें।

परिचर्चा शुरू करने के लिए कुछ प्रश्न इस प्रकार से हो सकते है –

- आपने किस–किस मूल्य के सिक्के और नोट देखे हैं?
- एक रूपये में कितने पैसे होते हैं?
- एक रूपये के बदले 50 पैसे वाले कितने सिक्के मिलेगें?
- किस मूल्य के चार सिक्के देने से एक रूपये वाली चीज़ मिलेगी?

चर्चा के इसी क्रम में आप उन्हें नीचे लिखे गये नोट और सिक्के दिखाकर पहचान करायें।

(इन सिक्को और नोटों का प्रबंध आपको पहले से करना होगा)

सिक्के – 25 पैसे, 50 पैसे, 1 रूपया, 2 रूपया, 5 रूपया

(यदि आपको 25 पैसे से छोटे सिक्के भी मिल सकें तो उन्हें भी दिखाये)

नोटः 1 रूपया, 2 रूपया, 5 रूपया, 10रूपया, 20 रूपया, 50रूपया, 100 रूपया, 500रूपया,

(आप 500 रू. का छाया चित्र भी काम में ला सकते हैं।)

कुछ लोगों को इस बात की ठीक–ठीक जानकारी नहीं होती है किस किस मूल्य के नोट और सिक्के नहीं होते हैं। इस संबंध में परिचर्चा करना उचित होगा। परिचर्चा शुरू करने के लिए आप श्यापट्ट पर निम्नलिखित वाक्य लिख दें उनमें से कुछ सही हैं और कुछ गलत जिसे प्रतिभागियों (बच्चों) को बताना है।

- 500 रूपये के नोट के बदले 250 रू0 के दो नोट मिलेंगे।
- 100 रूपये के नोट के बदले 50 रू के दो नोट मिलते हैं।
- राजू को सामान खरीदने के लिए मां ने 100 रू का नोट दिया
- 50 रू. और 20 रू. के नोटों के बीच का नोट 25 रू का होता है।
- 500 और 100 रू. के बीच का कोई नोट नहीं होता है।
- 5 रू. के सिक्के के बदले आपको 3 रू में दो सिक्के मिलेंगें।
- 50 रू. और 100 रू. के बीच का कोई नोट नहीं होता।

पाठ्य पुस्तक

नोट और सिक्कों की पहचान पुष्ट करने के लिए आप बाल गणित भाग–2 में पृष्ठ 38 से 40 तक पाठ लेन–देन के अंतर्गत दिये गये उदाहरणों और अभ्यास का सहारा लें।

सिक्के और नोटों की पहचान सभी के लिए अत्यन्त महत्वपूर्ण है। लेन–देन में या खरीद–बिक्री में रूपये–पैसों तथा बड़े–छोटे नोटों में आपसी संबंध की ठीक ठीक जानकारी होना बहुत जरूरी है।

इसके लिए आप शिक्षण संदर्शिका बाल गणित भाग दो का सहारा ले सकते हैं। इसमें रूपये पैसे की अदला–बदली के अंतर्गत दो गतिविधियां दी गई हैं।

संदर्शिका

रूपये–पैसे की अदला बदली के अन्तर्गत शिक्षक संदर्शिका बाल गणित –भाग–2 के पृष्ठ 57 पर दी गई गतिविधियों के अनुरूप सामग्री तैयार कर छोटे–बड़े सिक्कों तथा नोटों में आपसी संबंध की समझ विकसित करें।

अधिगम बिंदु: रूपये –पैसे के जोड़–घटा व गुणा–भाग में सामान्य विधि ही अपनाई जाती है। आओ एक प्रश्न हल करके देखें। प्रश्न श्याम पट्ट पर लिखें

प्रश्न– बबलू ने 10 रू के आम और 8 रू. के केले खरीदे। उसने फलवाले को 20 रू का नोट दिया।

बताओ उसे कितने रू. वापस मिले।

खरीदे गये फल	आम	10 रूपये
	केले	+ 8 रूपये
	कुल मूल्य	**18 रूपये**

दिया गया नोट	20 रूपये
खरीदे गये फल	–18 रूपये
रूपये वापस लौटे	**02 रूपये**

रूपये –पैसों के जोड़–घटाव का अभ्यास कराने के लिए आप बाल गणित भाग–2 की पाठ पुस्तक की मद्द ले सकते हैं। इसे पाठ पुस्तक के पृष्ठ 40–41 पर देख सकते हो।

शिक्षक संदर्शिका	गतिविधि द्वारा क्रिया–कलाप को रोचक बनाने के लिए आप शिक्षव संदर्शिका में पृष्ठ 59 और 60 पर सुझाई गयी गतिविधियों क सहारा ले सकते हैं।

विचार बिन्दु: घटाने को चीजों के कम होने के रूप में देखना।

गतिविधिः घटाने की अवधारणा विकसित करने के लिए मूर्त प्रतीकों का सहारा लेकर आगे बढ़ना उचित होगा।

3	कम हुआ	1	बचे	2
3	घटाव	1	बराबर	2
3	–	1	=	2

इसी क्रम में घटाव के चिन्ह

अध्याय –12

हमारा पर्यावरण

पर्यावरण क्या है ?

हमारे चारों ओर जो भी प्राकृतिक और मनृष्य द्वारा बनाई गई वस्तुऐं हैं, वे सब मिलकर पर्यावरण बनाती हैं । इन सबको मिलाकर पर्यावरण का अर्थ है, हवा, पानी, मिट्टी, पेड़, पौधे, पशुपक्षी, जीव–जन्तु, आदि। इन सबको मिलाकर बाहरी पर्यावरण बनता है। ये सभी एक दूसरे पर निर्भर हैं। जहाँ इन सब में असन्तुलन पैदा हुआ, वहीं समस्याएँ खड़ी होती हैं।

पर्यावरण मुख्यतः दो रूपों में दिखाई देता है। एक भौतिक जगत और दूसरा जैविक जगत। भैतिक जगत में धरती, नदियां, पहाड़, आकाश, हवा, सूरज, चाँद, तारे आदि आते हैं। भौतिक और जैविक जगत में आपसी सम्बन्ध भी होता है जैसे सूर्य की रोशनी में पेड़–पौधे अपना भोजन बनाते हैं । पेड़–पौधों से मनुष्यों को भोजन मिलता है। ऐसे ही दोनों के बीच अनेक प्रकार के सम्बन्ध हैं ।

सभ्यता, समाज और संस्कृति ये सभी पर्यावरण के ही अंग हैं। प्राथमिक स्तर पर पर्यावरण अध्ययन में प्राकृतिक विज्ञान, समाजिक विज्ञान जिसमे इतिहास नागरिक शास्त्र और भूगोल भी शामिल हैं ।

पर्यावरण के विषय में प्रतिभागियों से चर्चा

प्रतिभागियों से प्राथमिक स्तर पर पर्यावरण के क्षेत्र में चर्चा की जायेगी।

उनसे कक्षा 1 से 5 तक, हिन्दी, गणित, हमरा परिवेश, ज्ञान विज्ञान और हमारा समाज पाठ्य पुस्तकों से समूहों में पाठों के नाम हटवाये जायेगें।

समूह विषयवार एवं कक्षावार बनाये जायें जैसे

(1) कक्षा 2 से 3 तक हिन्दी भाषा का समूह – पहला

(2) कक्षा 4 से 5 तक हिन्दी भाषा का समूह – दूसरा

(3) कक्षा 1 से 3 तक गणित का समूह – तीसरा

(4) कक्षा 4 से 5 तक गणित का समूह – चौथा

(5) कक्षा 3 से हमारा परिवेश का समूह – पाचवाँ

(6) कक्षा 4 एवं 5, ज्ञान विज्ञान का समूह – छठा

(7) कक्षा 4 एवं 5, हमारा समाज का समूह – सातवाँ

–संख्या के आधार पर पांच से सात समूह, बन सकते हैं – ये समूह पहले पृष्ठ पर दिये गये विवरण के आधार पर पाठ्य पृस्तकों से पर्यावरण के अंश छाँटेंगे।

– अनुदेशकों के द्वारा छाँटे गये विषयों से मिलान करें।

कक्षा–1 हिन्दी

गणित में पर्यावरण से सम्बन्धित पाठ

1–बाग

2–तालाब गणित

3–रसोई

4–स्टेशन

5–कितने फल

6–जाड़ा, गर्मी, बरसात,

(संदर्भ भाषा किरण भाग–1)

कक्षा–2 हिन्दी

में पर्यावरण से सम्बन्धित पाठ

1–पास–पड़ोस

2–चिड़िया रानी

3–टपका का डर

4–मगर का घर

5–मेला

6–नन्हा चांद

7–जगत पुर के बच्चे

8–किसान की होशियारी

9–मै कौन हूँ

10–गाँव

11–हमारे सहयोगी

12–हमारे राष्ट्रीय प्रतीक

13–धूप

14–पूँछ हिलाने वाला भेड़िया

(संदर्भ भाषा किरण भाग–2

प्रशिक्षकों से:

आप देखेंगे कि हिन्दी पाठ्यपुस्तकों के अधिकाँश पाठों के नाम अनुदेशक छाँट कर देंगे। –इस उदाहरण से उन्हे स्पष्ट करना है कि पर्यावरण बहुत ही व्यापक है। हम जो भी करते

हैं, देखते हैं, अनुभव करते हैं उसमें अधिकांश भाग पर्यावरण से ही सम्बन्धित है। इसी प्रकार उनसे पर्यावरण के क्षेत्र पाठ्य पुस्तकों से निकलवाये जायेंगे।

आपने देखा (पाठ्यपुस्तकों के संदर्भ में अनुदेशकों से)

आपने देखा, कक्षा 1 से 5 तक की पाठ्य पुस्तकों में पर्यावरण का विस्तार किस प्रकार से दिया गया है? पाठय पुस्तकों में पर्यावरण के निम्नलिखित पक्ष पर्यावरण से सम्बन्धित बच्चे जान सकेंगे—

- बच्चे अपने आस—पास के खेतों का, नदियों , पहाड़ों, सड़कों, फैक्ट्रियों, ऐतिहासिक एवं दर्शनीय स्थलों के अवलोकन एवं बातचीत से प्रभावित होंगे। धीरे—धीरे बच्चों का दायरा बढ़ता जायेगा।
- बच्चे समाज की विविधता से धीरे—धीरे प्ररिचित होते जाते हैं।
- वे पूर्व ज्ञान के आधार पर ज्ञात से अज्ञात, प्राकृतिक एवं सामाजिक पर्यावरण से जुड़ते जाते हैं।
- पर्यावरण के अन्तर्गत, राष्ट्रीय पर्व, प्रतीक त्यौहार, मेले आदि क्षेत्र आते हैं।

अनुदेशकों की सहायता से बच्चों को पर्यावरण से परिचित कराना होगा।

पर्यावरण शिक्षण अधिगम प्रक्रिया

प्राथमिक कक्षाओं की पाठ्य पुस्तकों में विषयों को स्पष्ट रूप से समझने के लिए विधियाँ इस प्रकार से दी गई हैं।

- अवलोकन करना (जानो)
- निरीक्षण/परीक्षण करना (खुद करके देखो)
- अनुभव करना (समझो)
- सीखने की प्रवृत्ति
- कल्पना शक्ति
- दक्षता और कौशलों का विकास
- स्व मूल्याँकन
- कितना सीखा

- आओ करके देंखें

अवलोकन करना :

–अवलोकन में, बच्चे वास्तविक रूप से घटनाओ, वस्तुओं आदि को देखते हैं। –बच्चे देखकर समझाने का प्रयास करते हैं। अवलोकन से बच्चे अपने चारों ओर की घटनाओं, स्थानों वस्तुओं आदि को स्पष्ट रूप से समझ लेते हें।

निरीक्षण और परीक्षण करना :

अवलोकन में, गहराई से देखने को निरीक्षण कहते हैं। निरीक्षण से देखी गई वस्तु, घटना, स्थान आदि को समझाने में मद्द मिलती है। परीक्षण में घटनाओं की जाँच की जाती है। इससे हमे और अधिक स्पष्ट जानकारी मिलती है।

अनुभव करनाः

बच्चे अपने आस–पास जो कुछ भी देखते हैं उसे अनुभव करनाचाहते हैं ।– अनुभव से बच्चों पर अपने आस–पास की घ्टनाओं का अधिक प्रभाव पड़ता है। जैसे वर्फ ठोस दिखती है। ध्यान से देखें तो वह पिघलती सी दिखती है। यदि हाथ लगाकर देखेंगे तो ठंडई का अनुभव होगा।

सीखने की प्रवृत्ति :

अनुभव करने से बच्चों पर प्रभाव पड़ता है। वे सीखने की प्रक्रिया में सम्मलित होते है ।– अवलोकन, निरीक्षण, परीक्षण एवं अनुभव से उनकी जानकारी और समझ बढ़ती जाती है। इस प्रक्रिया से उनमें सीखन की प्रवृतित बढ़ती जाती है।

कल्पना शक्ति :

ज्ञात प्रक्रिया या अनुभव के विभिन स्तरों से गुजरने पर बचों को न केवल आनन्द आता है बल्कि वे उसके बारे में और अधिक सोचने हैं। यही उनके कल्पना शक्ति का आधार बनता है।

दक्षताओं और कौशलों का विकास :

जब बच्चे स्वयं किसी काम को करने लगते है तो इससे उनमे उत्साह आने लगता है। इससे उनके कार्य में निखार और सुधार आने लगता है। कार्य की जानकारी और करने के अभ्यास से उनमें दक्षता और कुशलता आने लगती है।

स्व मूल्यॉंकन :

बच्चे जब स्वयं समझने लगें कि उसने क्या और कितना सीखा तो वह स्व मूल्यॉंकन कहलाता है। क्या उन्हे सीखना है? यह पता लगने पर उसे सीखने के लिए बच्चे प्रयास करते है।

कितना सीखा :

इन शब्दों का प्रयोग पाठ्य पुस्तकों में बराबर हुआ है। शिक्षण – अधिगम प्रक्रिया में बीच–बीच में पता लगाया जाता है कि जो भी सिखाया या बताया जा रहा है उसमे से बच्चों ने कितना सीखा है। इससे पढ़ने –पढ़ाने की गति तय करने मेंआसानी रहती है।

आओ करके देखें :

ज्ञान विज्ञान की पुस्तकों में, आओ करके देखें, आपको जगह–जगह देखने को मिलेगा । कोरी कल्पना से पर्यावरण को नहीं समझा जा सकता। बच्चों के समझने एवं प्रयोग करने के अवसर देने होगें । इससे बच्चों को पर्यावरण समझने मेंआसानी होगी।

पर्यावरण शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया में आये विभिन्न्न चरणों पर आधारित, हमारा प्ररिवेश कक्षा–3 की पाठ्यपुस्तक पर आधारित पाठ संकेत

शीर्षक पर्यावरण प्रदूषण

उद्देश्य–

(1) बच्चे जल प्रदूषण, वायृ प्रदूषण को समझोगे।

(2) बच्चे प्रदूषण से बचने के उपाय जानेंगे।

<u>पूर्व ज्ञान</u>

बच्चों को शोर, गंदे स्थानों की थोड़ी सी जानकारी है।

जल प्रदूषण

भ्रमण (अवलोकन हेतु)

बच्चों को पास का ऐसा स्थान दिखाया जाये जहाँ गंदा पानी, गंदगी आदि हो जैसे घरों के बाहर पानी और पड़ी गंदगी। तालाब, कुओं का किनारा, गाँव का किनारा भी गंदगी स्थान हो सकता है।

बच्चों से बातचीत

बच्चो को पीने के पानी और घरों के बाहर के गंदे पानी का अन्तर दिखाकर बातचीत शुरू की जा सकती है। बच्चों से पूँछा जाय कि आप कौन सा पानी पी सकते है बच्चों से पूँछा जाय कि साफ पानी बता सकते हैं। बच्चे पीने के लिए साफ पानी बता सकते हैं। बाहर का पानी पीने के लिए मना करेंगे। अब बच्चों से पूंछे कि ताजा पानी कई दिनों तक रखा रहने पर भी गंदा हो जाता है। कई दिनों तक पानी रखा रहने पर पीने के लिए अच्छा नहीं है। बच्चों को बतायेंकई दिन से घड़ों, बालटियों में रखा पानी फैंक दिया जाता है। तजा पानी ही पीने के लिए साफ या अच्छा होता है। इस बात को बच्चों को सावधानी पूर्वक समझाना है।

बच्चों से चर्चा की जायेः

बच्चों बताओ तो

1. घर के बाहर का पानी क्यों गंदा हो जाता है?
2. कई दिनों तक घर में पीने का पानी, पीने के लिए गंदा हो सकता है।
3. गाँव के तालाब का पानी गंदा न हो इसके लिए क्या कर सकतें हैं?

बच्चों को बातचीत में स्पष्ट करें :

1. घर के बाहर का पानी घर की सफाई करने से, वर्तनों की सफाई से, घर, घर से बाहर जाने से गंदा हो जाता है । बच्चों से पूछें कि घर में साफ पानी से वर्तन साफ करने पर पानी क्या गंदा हो जाता है? भ्रमण में या केन्द्र के पास गंदे पानी को दिखाया जा सकता है।
2. कई दिनों तक पीने का पानी घर में रखने से उसका रंग बदल जायेगा भले ही वह ढका हो। उसे नहीं पीना चाहिए यह बत बच्चों को चर्चा में अवश्य स्पष्ट किया जाये। ताजा पानी भी खुला नहीं रखना चाहिए उसमें धूल, कीड़े मकोड़े पड़ने से वह पीने लायक नहीं रह जाता है।
3. तालाब का पानी गंदा न दिखे या उसमें बदबू न आये इसके लिए जरूरी है तालाब में गंदगी न डाली जाये। गाँव का गंदा पानि उसमें न पड़े। तालाब के किनारे कूड़ा न डाला जाये। तालाब में कपड़े न धोयें। तालाब में जानवरों को न नहलाया जाये तो तालाब में गंदगी नहीं हो पायेगी।

बच्चों को स्पष्ट किया जाये कि आपने गंदे पानी को देखा और समझा। पानी में गंदगी ही जल प्रदूषण कहलाती है। सभी को साफ और ताजा पानी पीना चाहिए।

वायु प्रदूषणः

बच्चों को ऐसी जगह दिखाई जाये जहाँ धुआँ, धूल अथवा गंदगी हो।

बच्चों से पूछें

1. तुन्हे गंदगी के पास,
2. उड़ती धूल में,
3. धुयें में जाने पर कैसा लगेगा?

बच्चे इस बारे में कुछ उत्तर देंगे। उन्हे स्पष्ट करें –

1. गंदगी के पास जाने पर बदबू आयेगी।
2. धूल और धुएं में साँस लेने में परेशानी होगी।

यह कैसे होता है ? बच्चों से बातचीत करें (मूल्याँकन)

1. खुले में कूड़ा या मरा जानवर डालने से क्या होगा?
2. धुआँ और धूल हवा को साफ करते हैं या गंदा।
3. धुंयें से आँखो में क्या होगा?

बच्चों के उत्तरों को ठीक करते हुए स्पष्ट करें गंदगी से, धूल से, धुंये से वायु प्रदेषण होता है।

वायु प्रदूषण रोकने के लिए क्या करें

1. आस–पास कूड़ा या मरे जानवर न डालें ।
2. घरों में धुआँ रहित चूल्हे हों ।
3. पेड़–पौधे लगायें।
4. फैक्ट्री की चिमनी ऊँची हो
5. बच्चे अपने घर या बाहर कम से कम एक अपना पेड़ लगायें।

- बच्चों को स्पष्ट करें कि हमारे चारों ओर की हवा साफ रहेगी तो हम आसानी से सांस ले सकते हैं।
- हमें बदवू नहीं आयेगी और हमारी आंखों को भी तकलीफ नहीं होगी।
- हमारी पाठ्यपुस्तकों और शिक्षक संदर्शिकाओं में पर्यावरण के विषयों को स्पष्ट करने के लिए बहुत सी गतिविधियॉं दी गई हैं।

- शिक्षक संदर्शिकाओं में क्रियाकलाप के नाम से,
- ज्ञान विज्ञान को पाठ्यपुस्तक में कितना सीखा के नाम से,
- हमारा समाज पाठ्यपुस्तक में अभ्यास के नम से,
- भाषा किरण में अभ्यास के नाम से अनेक गतिविधियॉं दी गई हैं।

इस प्रकार पर्यावरण अध्ययन के लिए अवलोकन, निरीक्षण, अनुभव, स्वमूल्यांकन, बातचीत आदि का उपयोग किया जा सकता है।

मूल्यांकन

प्रत्येक शिक्षा केन्द्र, केन्द्र की व्यवस्था एवं उसके विभिन्न अंगों के दायित्व का प्रमाण शिक्षा की अन्तिम कसौटी, बच्चों की उपलब्धि पर निर्भर करती है। केन्द्र की क्षमता एवं उत्तरदायित्व निभाने की क्षमता के निर्धारण के लिए आवश्यक है एक सम्पूर्ण तथा व्यापक मूल्यांकन योजना के रूप में समेकित उपलब्धियों को जानने की।

मूल्यांकन का अर्थ

बच्चे किसी विषय एवं तथ्य को कितना सीख चुके हैं इसकी जानकारी कैसे हो? पठन–पाठन की प्रक्रिया प्रभावी है या नहीं इसकी परख कैसे करें। सीखने के बाद बच्चे के व्यवहार में किस प्रकार का परिवर्तन हुआ, इसका पता कैसे करें। हम यह कैसे जान सकते हैं कि बच्चे किसी विषय वस्तु को कितना सीख चुके है तथा उनके साथ और क्या करने की आवश्यकता है?

उक्त बातों का पता करने या परखने के लिए हम तरीकों को अपनाते हैं वही मूल्यांकन है। यह निरन्तर चलने वाली प्रक्रिया है। इसे किसी दायरे में नहीं बांधा जा सकता।

सीखने की प्रक्रिया

सीखने की प्रक्रिया के मुख्यरूप से तीन अंग है।

1. शिक्षण के उद्देश्य
2. सीखना–सिखाना
3. मूल्यांकन

सीखने की प्रक्रिया के तीनो अंगो का एक दूसरे से सम्बंध तथा एक दूसरे के पूरक हैं। मूल्यांकन के परिणामों पर पुनः विचार होता है जिससे बच्चों के लिए शिक्षण प्रक्रिया में जोड़ा या घटाया जाता हैं

मूल्यांकन का एक लक्ष्य भी होता है कि शिक्षण के उद्देश्यों की प्राप्ति हो रही है या नहीं। इसलिए हमारे लिए आवश्यक है कि शिक्षण के उद्देश्यों को भलीभांति जानना जरूरी है। वरना मूल्यांकन का कोई मतलब नहीं होगा।

केन्द्र के बच्चों का मूल्यांकन

केन्द्र के बच्चों का मूल्यांकन हम तीन भागों में बाँट सकते है।

1. सत्त मूल्यांकन
2. पाक्षिक मूल्यांकन
3. वार्षिक मूल्यांकन

1. सत्त मूल्यांकन

सत्त मूल्यांकन पठन–पाठन के साथ–साथ चलता है। सत्त मूल्यांकन के आवश्यक परिणामों का रिकार्ड रखा जाता है। यह मूल्यांकन शिक्षण तथा शिक्षणेत्तर दोंनो पक्षों का होता है। विषयगत (भाषा, गणित, विज्ञान, सामाजिक विषय आदि) शिक्षण के साथ–साथ तथा बाद में शिक्षक/अनुदेशक द्वारा मूल्यांकन किया जाता है। इसी के साथ–साथ बच्चों से सफाई, नियमितता, सहयोग आदि शिक्षणेत्तर गुणों के सम्बंध में मूल्यांकन किया जाता है। सत्त मूल्यांकन की सहायता से, बच्चों की प्रगति की लगातार समीक्षा हो जाती है।

2. पाक्षिक मूल्यांकन

सत्त मूल्यांकन में स्पष्ट किया गया है कि यह लगातार चलने वाली प्रक्रिया है। इसी प्रकार पाक्षिक अर्थात 15 दिन में व्यवस्थित ढंग से मूल्यांकन किया जाये। पाक्षिक मूल्यांकन संज्ञानात्मक (विषयगत) तथा ज्ञानेत्तर क्षेत्र का किया जायेगा।

3. वार्षिक मूल्यांकन

सत्र के अंत में पाठ्यपुस्तकों के आधार पर बने परीक्षणों पर वार्षिक परीक्षा ली जाती है। यह परीक्षण अध्यापक/अनुदेशक निर्मित होते हैं।

बच्चों का मूल्यांकन कैसे करें ?

मूल्यांकन हमारी सीखने की प्रक्रिया का अभिन्न अंग है। पढ़ते समय बच्चे गीत, कविताएं सीखते हैं, पुस्तकें पढ़ते हैं, उनमें दिये गये निर्देशों के आधार पर कार्य करते हैं जैसे उत्तर लिखते हैं, चित्र बनाते हैं या अन्य गतिविधियां करते हैं। इन सब बातों को पूछने पर वे कितना बता पाते हैं, किस तरह बता पाते है अदि का जानना बच्चों की उपलब्धि का मूल्यांकन कहलाता है।

बच्चों की उपलब्धि का मूल्यांकन कई प्रकार से किया जा सकता है।

- मूल्यांकन अलग–अलग या सामूहिक रूप से किया जा सकता है।
- मूल्यांकन मौखिक, गतिविधि करवाकर, गतिविधियों का अवलोकन करके या फिर लिखित रूप से किया जा सकता है।
- बच्चों को अपरिचित विषयवस्तु पढ़ने तथा पाठ्यक्रम से प्रश्न हल करवाकर भी किया जा सकता है।
- मूल्यांकन दिन प्रतिदिन के कार्य पर, एक निश्चित अवधि के बाद, निश्चित पाठ पढ़ने के बाद वर्ष के अन्त में या फिर पूरी पुस्तक समाप्त होने के बाद किया जा सकता है।

मोटे तौर पर मूल्यांकन के लिए इस प्रकार से प्रक्रिया अपनाई जा सकती है–

1. **मौखिक प्रश्न पूछकर**

   इससे बच्चों को सुनने, दोहराने, निर्देशों को समझने तथा उनके अनुसार कार्य करने की क्षमता जानी जा सकती है। बच्चों ने पाठ्यपुस्तक के कितने भाग को सीख लिया है, इसका मूल्यांकन मौखिक रूप से प्रश्न पूछ कर किया जा सकता है।

2. **पुस्तक पढ़वाकर**

   इसमें देखा जाता है कि बच्चे या किसी अन्य लिखी हुई विषयवस्तु को सही–सही, शुद्ध उच्चारण के साथ पढ़ पाते हैं या नहीं।

3. **लिखवाकर**

   लिखित मूल्यांकन से बच्चों के शुद्ध लेखन, अपने विचारों को व्यक्त करने, प्रश्नों का उत्तर देने, गणित के प्रश्न हल करने, चित्र बनाने की क्षमताओं को देखा जा सकता है।

4. **हाथ से काम करवाकर**

   बच्चों से हाथ से काम करवाकर जैसे काग़ज़ से, मिट्टी से, लकड़ी से, कपड़े से चीज़ें बनाने की क्षमता का मूल्यांकन किया जा सकता है।

5. अवलोकन करके

बच्चों के खेलने कूदने के तरीके, उठने बैठने के तरीके, व्यायाम करने के तरीके, भ्रमण के समय किसी वस्तु को बारीकी से देखने के तरीके, उनके व्यवहार के तरीके आदि से मूल्यांकन किया जा सकता है।

6. समझ का स्तर

यह मूल्यांकन का एक बहुत ही महत्वपूर्ण पहलू है। बच्चों की विषयवस्तु के प्रति समझ की जानकारी से है। मूल्यांकन चाहे मौखिक हो या लिखित, यह पता करना है कि वे क्या शब्दों का अर्थ समझ लेते हैं?, क्या वाक्यों में प्रयोग कर पाते हैं? कहानी या कविता का सार बता पाते हैं? गणित में इबारती प्रश्न हल कर सकते हैं। इस प्रकारके मूल्यांकन से बच्चों की विषयवस्तु की गहराई को जांचा जा सकता है।

7. बच्चों की अभ्यास पुस्तिका का अवलोकन कर।

8. पाठ्य पुस्तकों के जांच पत्रको का उपयोग कर।

9. अनुदेशक द्वारा निर्मित जांच पत्रकों के प्रयोग द्वारा

यह ठीक है कि प्राथमिक स्तर पर कम से कम प्रथम दो कक्षाओं में औपचारिक परीक्षा नहीं ली जानी चाहिए। लेकिन जरूरी है कि अनौपचारिक ढंग से किन्तु अत्यन्त सावधानी पूर्वक जांच कर ली जाय कि सभी बच्चे उन मूलभूत कौशल एवं दक्षताओं को जो प्राथमिक शिक्षा का मलाधार हैं प्राप्त कर लें।

बच्चों के सतत् मूल्यांकन का उदाहरण इस प्रकार से है जिसके आधार पर दिये गये निर्देशों के आधार पर मूल्यांकन किया जा सकता है।

बच्चों का विषयगत सतत् मूल्यांकन

भाषा, गणित, हमारा परिवेश, ज्ञान–विज्ञान और हमारा समाज आदि में सतत् मूल्यांकन इस प्रकार अपनाया गया हैः–

भाषा (भाषा किरण)

- चित्रों पर बातचीत, जिसमें पहचान और प्रश्न को लिया जाता है। जैसे –

भाषा किरण –1, पृ0 6

- गांव में और क्या–क्या चीज़ देखने को मिलती हैं इससे सम्बन्धित प्रश्न
- बच्चों को बाग़ के चित्र का अवलोकन कराएं उनसे दूर–पास, ऊँचा–नीचा, छोटा –बड़ा से सम्बंधित प्रश्न पूछें तथा चर्चा कराएं

भाषा किरण –1, पृ0 6

- अभ्यास के रूप में प्रश्नउत्तर, पहचान कराना, वर्गीकरण, निष्कर्ष निकालना, अभिव्यक्ति तथा समस्या समाधान को अपनाया जाता है

भाषा किरण –3, पृ0 8

- वाक्यों में प्रयोग, वर्णो की पहचान, पढ़ना तथा विषय के अनुसार कविता आदि कहलवाना।

भाषा किरण –3, पृ0 11

- भाषा के पाठों में दिये निर्देशों से गतिविधियां कराई जाएँ। जैसे – भाषा किरण–3 पृ0 41 बच्चे पाठ का स्वमं अध्ययन करें। कक्षा में पाठ पर आधारित गतिविधि कराएँ।
- भाषा की पुस्तक में आये शब्दों पर कार्य कराएं जायें जैसे– शब्दकोश, बोध प्रश्न, शब्दों का खेल, इसे भी जानो, भावबोध, अब करने की बारी, तुम्हारी कलम से, खोजबीन आदि का उपयोग किया जा सकता है।

भाषा किरण –5, पृ0 3

अतः पाठ के नीचे के निर्देशों को अपनायें जाने की आवश्यकता है।

अनुदेशकों से

अनुदेशक प्रतिभागियों से उनकी मूल्यांकन सम्बंधी जिज्ञासाओं पर चर्चा करके, वैकल्पिक शिक्षा केन्द्र के मूल्यांकन पर चर्चा की जाये।

वैकल्पिक शिक्षा केन्द्र का मूल्यांकन

वैकल्पिक शिक्षा के मूल्यांकन के निम्नलिखित चरण होंगे–

1. केन्द्र का स्थान चयन

सबसे पहले केन्द्र स्थान के चयन को देखना होगा। केन्द्र क्या ऐसे स्थान पर है जहां प्रतिभागी बच्चे सुविधाजनक ढ़ंग से आ–जा सक्ते हैं। केन्द्र का स्थान बच्चों के क्षेत्र का हो तो प्रभावी रहेगा।

2. अनुदेशक का चयन

अनुदेशक वैकल्पिक शिक्षा केन्द्र का एक मात्र कर्ताधर्ता है। अतः उसका समय से चयन जरूरी है, जिससे वह पठन–पाठन प्रक्रिया को समय से आरम्भ कर सके।

3. बच्चों का नामांकन

बच्चे केन्द्र के लाभार्थी हैं। इन्हीं के लिए यह सभी व्यवस्था की जा रही हैं। यदि बहुत कम बच्चे होंगे तो केन्द्र संचालन में उत्साह नहीं होगा।

4. बच्चों के लिए अध्ययन सामग्री

वैकल्पिक शिक्षा केन्द्र पर बच्चों को निःशुल्क सामग्री मिलती है। यह देखना होगा कि बच्चों के पास सामग्री पहुँची है या नहीं।

5. अनुदेशक का प्रशिक्षण

सामान्यतया अनुदेशक उतना शिक्षित नहीं होता है कि वह केन्द्र का सफलतापूर्वक संचालन कर सके। इसलिए केन्द्र संचालन से पूर्व तथा दिसम्बर/जनवरी में अनुदेशक का प्रशिक्षण आवश्यक है।

6. केन्द्र का अवलोकन

केन्द्र की स्थिति का अध्ययन, केन्द्र के अवलोकन से हो सकता है। केन्द्र संचालन की स्थिति को देखकर, केन्द्र की विशेषता का पता चल सकता है।

7. अनुदेशक की डायरी

अनुदेशक डायरी अनुदेशक के पिछले दैनिक क्रियाकलापों का विवरण है। अनुदेशक द्वारा किये गये कार्यो का उल्लेख केन्द्र की स्थ्सिति को स्पष्अ कर सकते हैं।

8. बच्चों को अगले स्तर पर जाने अथवा मुख्यधारा से जुड़ने की स्थिति की जानकारी

वैकल्पिक शिक्षा का प्रमुख उद्‌देश्य है कि वैकल्पिक शिक्षा के बच्चे अगले स्ता/कक्षा में जायें अथवा शिक्षा की मुख्यधारा से जुड़ें। इससे केन्द्र तथा अनुदेशक दोनों का मूल्यांकन हो जायेगा।

9. समुदाय से सम्पर्क

वैकल्पिक शिक्षा के प्रभावी संचालन के लिए समुदाय का सहयोग आवश्यक है। इसलिए केन्द्र चयन, केन्द्र की व्यवस्था अन्य प्रकार से सहयोग के लिए समुदाय से बातचीत करके पता चल सकता है।

10. केन्द्र के बच्चों से जानकारी

अनुदेशक और केन्द्र के विषय में हमें बहुत सी जानकारी, केन्द्र पर आने वाले से मिलती है। इससे भी केन्द्र के विषय में जानकारी मिल सकती है।

11. निरीक्षण संवर्ग से

केन्द्र के विषय में बहुत सी जानकारी विशेष रूप से एन्पी.आर.सी समन्वयक से मिलती है। बी.आर.सी समन्वयकों तथा डायट के संकाय सदस्यों से मिल जाती है।

12. केन्द्र के रिकार्ड तथा सामग्री का अवलोकन

केन्द्र का मूल्यांकन, वहां पर उपलब्ध शिक्षण अधिगम सामग्री तथा आवश्यक रिकार्डो के अवलोकन से किया जा सकता है।

इस प्रकार हम देंखे तो पायेंगे कि वैकल्पिक शिक्षा व्यवस्था के प्रभावी पक्ष देखने के लिए बच्चों का मूल्यांकन तथा व्यवस्था का मूल्यांकन अत्यन्त आवश्यक है।

पाठ्‌यपुस्तकों में मूल्यांकन के लिए विभिन्न स्थानों पर व्यवस्था की गई है। सत्‌त मूल्यांकन की सहायता से हम बच्चों की कमजोरियों को दूर करते हुये चल सकते हैं। इससे बच्चों में सीखने के प्रति उत्साह भी पैदा होगा और वैकल्पिक शिक्षा केन्द्र आकर्षक हो सकेगें।

फीड बैक

'फीड बैक' सीखने–सिखाने की एक महत्वपूर्ण प्रक्रिया है। इसके माध्यम से (प्रशिक्षक/शिक्षक) खुद के संबंध में (कार्य, व्यवहार) आदि में सुधारात्मक प्रतिक्रिया प्राप्त करता है।

'फीड बैक' संदर्भ में निम्नलिखित लाभ प्राप्त किये जा सकते हैं।

- प्रशिक्षक /प्रतिभागी खुद की क्षमता को परख सकता है।
- प्रशिक्षक /प्रतिभागी अपने अन्दर मौजूद गुणों का पता लगा सकता है।
- कमियों या कमजोरियों को दूर करने के उपायों का पता लगा सकता है।
- प्रशिक्षक/ प्रतिभागी अपने 'स्वयं' का विकास कर सकता है।

फीड बैक से सम्बंधित महत्वपूर्ण बातें

- 'फीड बैक' स्वयं मांगी जानी चाहिये किसी पर थोपी नहीं जानी चाहिए।
- फीड बैक स्पष्ट और विशिष्ट होना चाहिए।
- मूल्यांकन आधारित नहीं होना चाहिए।
- सृजनात्मक होनी चाहिए।
- उपयुक्त समय पर दिया जाना चाहिए।
- भावना पर आधारित होना चाहिए, किन्तु उसके साथ नीयत को नहीं जोड़ा जाना चाहिए।

प्रशिक्षण के दौरान प्रशिक्षक एवं प्रतिभागी फीडबैक निम्न गतिविधियों से प्राप्त कर सकते हैं।

- प्रशिक्षक प्रतिभागियो को फीड बैक प्राप्त करने के लिए प्रोत्साहित करें।
- प्रशिक्षक फीड बैक के लाभ से प्रतिभागियों को अवगत करायें।
- फीड बैक की प्रक्रिया स्पष्ट करते हुए बतायें कि जिन प्रतिभागियों द्वारा फीड बैक मांगा जाएगा उन्हें प्रशिक्षक द्वारा विगत 15 दिनों में उनके संदर्भ में प्राप्त अनुभवों के आधार पर सुधारात्मक सुझाव दिये जाएगें। यह सुझाव प्रतिभागी की इच्छानुसार समूह में अथवा अलग से दिया जा सकता है।

- प्रशिक्षक मुख्यतः निम्न बिन्दुओं पर प्रतिभागियों को फीड बैक दें।
    - ✡ सम्प्रेषण क्षमता – अपनी बात रखने में सक्षम है। नहीं है। कैसे सुधार कर सकते हैं?
    - ✡ हाव–भाव
    - ✡ व्यवहार – मिलनसार, हंसमुख, बराबरी का
    - ✡ विशिष्ट गुण – लेखक, कवि, गायक, अभिनेताआदि।
    - ✡ विशिष्ट अवगुण – धूम्रपान, क्रोधी
    - ✡ ज्ञान/जानकारी का स्तर

प्रशिक्षण द्वारा प्रतिभागियों से फीड बैक प्राप्त करना

प्रशिक्षक खुद के विषय में प्रतिभागियों से फीड बैक प्राप्त कर अपनी कार्य क्षमता को और बढ़ा सकता है।

- प्रशिक्षक प्रतिभागियों से फीड बैक प्राप्त करनेहेतु लिखित विचार मांगे।

निम्न प्रश्नों पर मत ले सकते हैं –

- प्रशिक्षण के दौरान दो अच्छी बातें जिसने आपको प्रभावित किया।
- प्रशिक्षण के दौरान ऐसी बातें जो आपको अच्छी नहीं लगी।
- प्रशिक्षक के संबंध में आपके विचार (नाम के साथ उल्लेख करें)

उपरोक्त बिन्दुओं पर प्रतिभागियों के प्राप्त विचारों केविश्लेषण से प्रशिक्षक खुद के संदर्भ में सुधारात्मक उपाय कर सकता है।

(नोटः– प्रतिभागियों को स्पष्ट करें कि यदि चाहे तो वे अपने नाम का उल्लेख न करे।)

प्रशिक्षण मूल्यांकन

- 15 दिवसीय प्रशिक्षण के मूल्यांकन के लिए निम्न प्रफ्र प्रतिभागियों को उपलब्ध करायें। प्रपत्र भरने को कहें।

मूल्यांकन प्रपत्र का प्रारूप

विषय	बहुत अच्छा	अच्छा	साधारण	खराब	बहुत खराब

विषय के अन्तर्गत उन विषय–वस्तुओं को क्रम से लिखें जिन पर प्रशिक्षण केदौरान समझ विकसित की गयी है।

- प्रतिभागियों को प्रत्येक विषय के आगे उनके अनुभव अनुसार (✓) का चिन्ह लगाने को कहें। विभिन्न विषयों पर उनकी समझ और विषयों को बताने का तरीका कैसा लगा? बहुत अच्छा या अच्छा या साधारण या खराब या बहुत खराब?
- प्रशिक्षण के संदर्भ में उनके क्या विचार या सुझाव हैं। टिप्पड़ी दें।

कार्ययोजना निर्माण

- सभी प्रतिभागी प्रशिक्षण के बाद एक पन्ने पर अपने कार्य–क्षेत्र में प्रशिक्षण के दौरान प्राप्त जानकारियों तथा तरीको को किस प्रकार उतारेगें, इसकी योजना बनायें।
- योजना निर्माण में सहायता हेतु निम्न प्रपत्र का प्रयोग कर सकते हैं।

नाम– गांव माह

केन्द्र का प्रकार – केन्द्र का नाम –

सप्ताह	**केन्द्र / शिक्षण संबंधित**	**वातावरण निर्माण / सामुदायिक सहभागिता संबंधित**
प्रथम सप्ताह		
द्वितीय सप्ताह		
तृतीय सप्ताह		
चतुर्थ सप्ताह		